04 - अमेरिकी हस्तक्षेप से मुक्ति की दिशा

05 - सामाजिक स्मृति, सांस्कृतिक साझापन

A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 2 अगस्त, 2025

06 - किसान नहीं कराते मिट्टी का परीक्षण रासायनिक खाद मिट्टी से छीन रहे...

07 - बुनियादी शिक्षा की दिशा में बढ़ते कदम

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 324, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

चुनाव से पहले नीतीश कुमार की घोषणाओं के पीछे क्या वजह?

उमेश कुमार राय

बिहार चुनाव की सरगर्मी से ठीक पहले मुख्यमंत्री नीतीश ने लोकलुभावन घोषणाओं की झड़ी लगा दी है। पिछले एक महीने के दरम्यान उन्होंने करीब आधा दर्जन घोषणाएं की हैं, जिन्हें अमलीजामा पहनाने में बिहार सरकार के खजाने पर खासा बोझ बढ़ेगा।

इनमें ताजा घोषणा प्रति माह 125 यूनिट बिजली मुफ्त देना है, मगर अन्य घोषणाओं के मुकाबले उनकी इस घोषणा की चर्चा कुछ अधिक है और इसकी वजह मुफ्त बिजली को लेकर उनका पुराना बयान है, जिसमें उन्होंने दिल्ली की तत्कालीन आप सरकार और अन्य राज्य सरकारों की इसलिए आलोचना की थी कि उन्होंने लोगों को मुफ्त बिजली देने की घोषणा की थी।

दिलचस्प बात ये भी है कि मुफ्त बिजली देने की बिहार सरकार की मंशा और इस पर वित्त विभाग की सहमति को लेकर पिछले दिनों मीडिया में जब खबरें चली थीं, तो वित्त विभाग ने प्रेस नोट जारी कर स्पष्ट तौर पर कहा था कि ऐसे किसी भी प्रस्ताव पर कोई सहमति नहीं दी गई है।

इस खंडन के तीसरे ही दिन मुख्यमंत्री ने घोषणा कर दी कि बिहार सरकार राज्य के सभी घरेलू उपभोक्ताओं को 125 यूनिट तक बिजली का कोई पैसा नहीं देना होगा। उन्होंने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर लिखा कि इससे 1.67 करोड़ परिवारों को लाभ होगा।

मुफ्त बिजली की घोषणा से पहले नीतीश कुमार ने 21 जून को सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के अंतर्गत एक करोड़ 11 लाख लोगों को मिल रही पेंशन की राशि 400 रुपये से बढ़ाकर 1100 रुपये करने का ऐलान किया। इसी तरह, अगले पांच वर्षों में यानी 2025 से 2030 तक बिहार के एक करोड़ युवाओं को सरकारी नौकरी और रोजगार देने की घोषणा भी उन्होंने की।

इसके अलावा सीएम ने मुख्यमंत्री कलाकार पेंशन योजना की शुरू करते हुए आर्थिक रूप से कमजोर कलाकारों को प्रति माह 3000 रुपये पेंशन देने और इंटर्नशिप करने के दौरान 12वीं पास युवाओं को 4000 रुपये, आईटीआई या डिप्लोमा पास युवाओं को 5000 रुपये और स्नातक व स्नातकोत्तर युवाओं को 6000 रुपये देने का ऐलान किया। गौरतलब है कि इन में से दो घोषणाएं - मुफ्त बिजली व पेंशन की राशि में बढ़ोतरी का वादा इंडिया अलायंस के पार्टनर राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नेता तेजस्वी यादव ने आज से 6-7 महीने पहले ही किया था।

तेजस्वी यादव ने दिसम्बर 2024 में ही एक सार्वजनिक कार्यक्रम में वादा किया था कि अगर उनकी सरकार बनती है, तो राज्य की जनता को हर महीने 200 यूनिट बिजली फ्री दी जाएगी। उसी महीने तेजस्वी यादव ये भी कहा था कि उनकी सरकार आने पर वृद्धा पेंशन और सामाजिक सुरक्षा पेंशन की राशि 400 रुपये प्रतिमाह से बढ़ाकर 1500 रुपये की जाएगी।

तेजस्वी यादव ने नीतीश कुमार की इन घोषणाओं को चुनावी हार का टेंशन करार दिया। पेंशन की राशि बढ़ाने की घोषणा पर प्रेस कॉन्फ्रेंस कर तेजस्वी यादव ने कहा कि वहीं, मुफ्त बिजली की घोषणा पर तेजस्वी यादव ने कहा, 'महागठबंधन की सरकार आ रही है, इसी टेंशन में एनडीए सरकार ने पेंशन की राशि बढ़ाई है।' उन्होंने आगे कहा था, 'उनके पास न तो सोच है, न विजन।' तेजस्वी ने आगे कहा था, 'हमने पहले ही मांग की थी कि हमारी घोषणाओं को बजट प्रस्ताव में शामिल किया जाए, लेकिन सरकार ने ध्यान नहीं दिया क्योंकि उसे डर था कि श्रेय तेजस्वी ले जाएगा।'

राजनीतिक विश्लेषक महेंद्र सुमन भी मानते हैं कि विपक्षी पार्टियों के चुनावी वादे के मद्देनजर ही नीतीश सरकार ने ये फैसले लिये हैं. वह कहते हैं। 'जाहिर है कि सरकार विपक्ष के मुद्दे छीन रही है।'

तेजस्वी यादव इन दिनों झारखंड और अन्य राज्यों के तर्ज पर बिहार में माई-बहिन सम्मान योजना लाने का वादा भी कर रहे हैं, जिसमें महिलाओं को हर महीने 2500 रुपये की आर्थिक मदद दी जाएगी। उल्लेखनीय है कि चुनाव से ठीक पहले इसी तरह की योजनाएं महाराष्ट्र, झारखंड, मध्यप्रदेश और पश्चिम बंगाल की सरकारों ने लागू की थीं, जिसका फायदा उन्हें मिला था और इन सभी राज्यों की सरकारों ने जीत दोहराई थी।

इसके अलावा महागठबंधन सरकारी नौकरी में 100 प्रतिशत डोमिसाइल नीति लागू करने का वादा भी कर रहा है, तो चर्चा है कि इस पर भी सरकार कुछ फैसले ले सकती है। हालांकि सरकार ने हाल ही में सरकारी नौकरियों में स्थानीय महिलाओं के लिए 35 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया है। नीतीश कुमार ने अपनी घोषणा में कहा है कि 125 यूनिट मुफ्त बिजली देने से कुल 1 करोड़ 67 लाख परिवारों को लाभ मिलेगा। जाति सर्वे 2022-2023 के मुताबिक, बिहार में कुल 2.766 करोड़ परिवार रहते हैं, जिनमें से 94.42 लाख परिवारों की मासिक आय 6 हजार रुपये व उससे कम है. वहीं, 81.91 लाख परिवारों की मासिक आय 6 हजार से 10 हजार रुपये के बीच है। ऐसे में इस घोषणा से एक बड़ी आबादी को आर्थिक फायदा होगा। लेकिन, इस फैसले से बिहार सरकार पर खर्च का बोझ भी बढ़ेगा और बिजली सार्वजनिक बिजली कंपनियां और नुकसान झेलेंगी। 1.67 करोड़ परिवारों को 125 यूनिट बिजली मुफ्त दिये जाने से बिजली कंपनियों पर सालाना 4500 करोड़ रुपये का अतिरिक्त खर्च बढ़ेगा। वहीं, सामाजिक सुरक्षा पेंशन राशि बढ़ाने से अब बिहार सरकार को सालाना 9324 करोड़ रुपये खर्च करने होंगे।

इसके अलावा बिहार सरकार ने अगले पांच वर्षों में 1 करोड़ युवाओं को सरकारी नौकरी और रोजगार देने का जो वादा किया है, उस पर भी मोटी रकम खर्च होगी। अर्थशास्त्री इसे बिहार सरकार के खजाने पर बड़ा बोझ के तौर पर देखते हैं और उनका कहना है कि इससे बिहार की आर्थिक सेहत पर खासा असर पड़ेगा।

नीतीश कुमार की इन घोषणाओं को जानकार दो तरह से देख रहे हैं। अव्वल तो ये माना जा रहा है कि जमीन पर सरकार के खिलाफ भारी आक्रोश है, जिसके चलते इस तरह की लोकलुभावन घोषणाएं की गई हैं और दूसरा, ये भी कहा जा रहा है कि इस तरह की घोषणाएं भाजपा के दबाव में की जा रही है।

नवल किशोर चौधरी कहते हैं, 'चूंकि विपक्षी पार्टियां भी सत्ता में आने के लिए लोकलुभावन वादे कर रही हैं, तो उसके जवाब में नीतीश सरकार को भी ऐसी घोषणाएं करनी पड़ रही हैं। आखिरकार उन्हें भी तो सत्ता बचानी है।'

(दि क्विंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

संस्कृत को बोलचाल की भाषा बनाना जरूरी

● भागवत बोले- संस्कृत सभी भाषाओं की है जननी

कहा- इसे समझना ही नहीं, सबको बोलना भी चाहिए

नागपुर (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने शुक्रवार को कहा कि भारत की सभी भाषाओं की जननी संस्कृत है। अब समय आ गया है कि इसे बोलचाल की भाषा बनाया जाए। नागपुर में एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि संस्कृत को केवल समझना नहीं, बोलना भी आना चाहिए। भागवत ने कहा कि संस्कृत विश्व विद्यालय को सरकार का सहयोग तो मिलेगा ही लेकिन असली जरूरत लोगों के सहयोग की है। उन्होंने माना कि वे संस्कृत जानते हैं लेकिन धाराप्रवाह बोल नहीं पाते। उन्होंने कहा कि संस्कृत को हर घर तक पहुंचाना होगा और इसे बातचीत का माध्यम बनाना पड़ेगा। संघ चीफ ने कहा कि आज देश में आत्मनिर्भर बनने की भावना पर आम सहमति है, लेकिन इसके लिए हमें अपनी बौद्धिक क्षमता और ज्ञान को विकसित करना होगा। उन्होंने कहा कि भाषा केवल शब्दों का माध्यम नहीं, बल्कि भाव होती है और हमारी असली पहचान भी भाषा से ही जुड़ी होती है। यह संस्थान संस्कृत को जीवंत रखेगा भागवत ने कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय में अभिनव भारती अंतरराष्ट्रीय अकादमिक भवन का उद्घाटन किया।

नौ सितंबर को होगा उपराष्ट्रपति का चुनाव

● ईसी का ऐलान, 21 अगस्त तक भरे जाएंगे नामांकन

नई दिल्ली (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति चुनाव 9 सितंबर को होगा। 21 अगस्त तक उपराष्ट्रपति पद के लिए नामांकन भरे जाएंगे। जगदीप धनखड़ ने 21 जुलाई की रात अचानक उपराष्ट्रपति के पद से इस्तीफा दिया था। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 22 जुलाई को धनखड़ का इस्तीफा मंजूर कर लिया था। 74 साल के धनखड़ का कार्यकाल 10 अगस्त 2027 तक था। चुनाव आयोग की ओर से इसका पूरा शेड्यूल जारी किया है। इसके तहत 7 अगस्त को उपराष्ट्रपति पद पर चुनाव के लिए अधिसूचना जारी की जाएगी। इसके बाद 21 अगस्त तक नामांकन दाखिल करने की डेट रहेगी। 22 अगस्त को नामांकन पत्र जांचे जाएंगे और 25 तारीख तक उन्हें वापस लिया जा सकेगा। यदि एक से ज्यादा उम्मीदवारों का नामांकन हुआ तो फिर चुनाव कराना पड़ेगा और ऐसी स्थिति में 9 सितंबर को मतदान कराया जाएगा। 9 सितंबर को सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक वोटिंग होगी। उसी दिन काउंटिंग होगी और शाम तक रिजल्ट आ जाएगा। जगदीप धनखड़ ने 21 जुलाई की शाम को इस्तीफा दे दिया था।

कांग्रेस नेता का दावा, सांसदों को रोकने बुलाए गए कमांडो

रिजिजू बोले- कुछ सदस्य आक्रामक हुए, उन्हें रोका गया

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के मानसून सत्र का शुक्रवार को 10वां दिन था। बिहार वोटर वेरिफिकेशन मुद्दे पर विपक्ष ने हंगामा किया। कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि, राज्यसभा में सदस्यों को रोकने के लिए कमांडो बुलाए गए। यह लोकतंत्र के इतिहास काला दिन है। कांग्रेस सांसद प्रमोद तिवारी ने कहा, आज कमांडो तैनात किए गए। कोई कह रहा है कि यह सीआईएसएफ है, कोई कुछ और कह रहा है। उन जवानों ने सदस्यों को स्टाफ से मिलने से रोका। हमारी महिला सदस्यों को पुरुषों जवानों ने रोका। जिस तरह से सदन के बाहर से लोगों को बुलाया गया और सांसदों को जबरदस्ती वेल में जाने से रोका गया, यह आपत्तिजनक है। सब कुछ कैमरे में कैद है। कांग्रेस के गया था। उधर कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश को

इस आरोप पर केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि, मुझे जो जानकारी मिली है। उसके मुताबिक कुछ सदस्य हंगामा करते हुए आक्रामक हो गए थे। सिर्फ उन्हें रोका लेटर लिखा है। खड़गे ने राज्यसभा के उपसभापति को भेजे लेटर में लिखा, हम इस बात से हैरान हैं कि सीआईएसएफ कर्मियों को सदन के वेल में लाया गया।

सुप्रभात

किसी की आँख पुरनम है,
मुहब्बत हो गई होगी
ज़ुबाँ पे क़िस्सा-ए-ग़म है,
मुहब्बत हो गई होगी
कभी हँसना, कभी रोना,
कभी हँस हँस के रो देना
अजब दिल का ये आलम है,
मुहब्बत हो गई होगी
किसी को सामने पा कर,
किसी के सुर्ख़ होंटों पर
अनोखा सा तबस्सुम है,
मुहब्बत हो गई होगी
जहाँ वीरान राहें थीं,
जहाँ हैरान आँखें थीं
वहाँ फूलों का मौसम है,
मुहब्बत हो गई होगी
हर एक सिलवट पे बिस्तर की,
किसी का नाम लिक्खा है
दिए की लौ मद्धम है,
मुहब्बत हो गई होगी।

- उमेरा अहमद

राज्यपाल श्री पटेल को स्काउट्स स्कार्फ पहनाकर किया सम्मानित

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल मंगुभाई पटेल की अध्यक्षता में स्काउट गाइड विश्व स्कार्फ दिवस राजभवन में शुक्रवार को मनाया गया।

राज्यपाल श्री पटेल को इस अवसर पर स्कार्फ पहना कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के राज्य मुख्य आयुक्त श्री पारस जैन एवं अन्य पदाधिकारी भी मौजूद रहे। विदित हो कि प्रतिवर्ष 01 अगस्त को स्काउट गाइड विश्व स्कार्फ दिवस मनाया जाता है। राज्यपाल, भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के राज्य संरक्षक होते हैं।

मुख्यमंत्री सीहोर में आज 4 औद्योगिक इकाइयों का करेंगे भूमि-पूजन

सीहोर जिले में होगा लगभग 1440 करोड़ रूपये का औद्योगिक निवेश

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आज 2 अगस्त शनिवार को सीहोर स्थित औद्योगिक क्षेत्र बड़ियाखेड़ी में लगभग 1406 करोड़ रूपये निवेश करने वाली 4 औद्योगिक इकाइयों का भूमिपूजन करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव 6 औद्योगिक इकाइयों को भूमि आवंटन के आशय पत्र भी वितरित करेंगे। जिससे यहां लगभग 33 करोड़ 85 लाख रूपये का निवेश होगा। इन औद्योगिक इकाइयों से सीहोर जिले में 1165 रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

4 औद्योगिक इकाइयों का होगा भूमिपूजन- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव कार्यक्रम में 4 औद्योगिक इकाइयों का भूमिपूजन करेंगे। इन इकाइयों में सीहोर जिले में लगभग 1406 करोड़ रूपये का निवेश होगा और 854 रोजगार के अवसर सृजित होंगे। जिन औद्योगिक इकाइयों का भूमि-पूजन होगा उनमें वान्यावेदा ग्रीन्स जो (झिलेला) सीहोर में 20.020 हेक्टेयर में स्थापित होगी। इसमें 115 करोड़ रुपये के निवेश से खाद्य प्रसंस्करण इकाई स्थापित होगी, जिससे 100 लोगों को रोजगार मिलेगा। इसी प्रकार बारमॉल्ट माल्टिंग इंडिया प्रा.लि. (बड़ियाखेड़ी फेस.2) 10.250 हेक्टेयर में स्थापित होगी। इसमें 400 करोड़ रुपए के निवेश से देश की सबसे बड़ी माल्ट निर्माता कंपनी की इकाई स्थापित होगी, जिससे 350 लोगों को रोजगार मिलेगा। सीजी पावर एंड इंडस्ट्रियल सॉल्यूशन लि. (जहांगीरपुरा) सीहोर में 18.260 हेक्टेयर में 888 करोड़ रुपए के निवेश से एशिया की सबसे बड़ी ट्रांसफार्मर इकाई स्थापित होगी, जिसमें 394 लोगों को रोजगार मिलेगा। इसी प्रकार श्री कृष्णा इंडस्ट्रीज (बड़ियाखेड़ी) सीहोर 0.476 हेक्टेयर में 3 करोड़ रुपए के निवेश से खाद्य प्रसंस्करण इकाई स्थापित होगी, जिससे 10 लोगों को रोजगार मिलेगा।

6 औद्योगिक इकाइयों को वितरित होंगे आशय पत्र

मुख्यमंत्री डॉ. यादव सीहोर में 6 औद्योगिक इकाइयों को आशय पत्र वितरित करेंगे, जिनमें आरटीडीबी इंडस्ट्रीज, स्वाति सोनी, संजय कुमार, अमित मूंदड़ा, प्रकाश पैकेजिंग और आरना वेंचर्स शामिल हैं। इन इकाइयों द्वारा सीहोर जिले में लगभग 33 करोड़ 85 लाख रूपये का निवेश होगा और 311 रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

प्रधानमंत्री मोदी का शीघ्र ही होगा प्रदेश आगमन : डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश के विकास कार्यों के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मिल रहा आशीर्वाद सभी प्रदेशवासियों के लिए उत्साहवर्धक है। प्रसन्नता का विषय है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने भोपाल मेट्रो ट्रेन के शुभारंभ और धार में आरंभ होने वाले प्रधानमंत्री मित्र पार्क के भूमिपूजन में स्वयं उपस्थित होकर आशीर्वाद प्रदान करने की मौखिक सहमति प्रदान की है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रधानमंत्री श्री मोदी से प्रदेश के किसान सम्मान कार्यक्रम में भी सहभागिता के लिए अनुरोध किया है। इन तीनों कार्यक्रमों के लिए शीघ्र ही प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा तिथि निर्धारित की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विधानसभा परिसर में मीडिया से चर्चा में बताया कि दिल्ली प्रवास के दौरान प्रदेश के चहुंमुखी विकास के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी से भेंट कर मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त किया।

विशाखापट्टनम में बनेगा एशिया का सबसे बड़ा डेटा सेंटर

● एक गीगावॉट क्षमता होगी, गूगल 50 हजार करोड़ रुपए का इन्वेस्टमेंट करेगा

विशाखापट्टनम (एजेंसी)। गूगल आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम में एशिया का सबसे बड़ा डेटा सेंटर बनाएगा। इसकी क्षमता 1 गीगावॉट होगी। फिलहाल देशभर में कुल 1.4 गीगावॉट क्षमता के डेटा सेंटर ऑपरेशनल हैं। रायटर्स के मुताबिक, गूगल इसके लिए 50 हजार करोड़ रुपए का इन्वेस्टमेंट करेगा। इसमें से 16 हजार करोड़ रुपए से रिन्युएबल एनर्जी से जुड़ी फेसिलिटी बनेगी। इसी से डेटा सेंटर को बिजली मिलेगी। अप्रैल में गूगल की पैरेंट कंपनी अल्फाबेट ने कहा था कि वह इस साल दुनियाभर में डेटा सेंटर की क्षमता बढ़ाने के लिए 6.25 लाख करोड़ रुपए खर्च करेगी। आंध्र प्रदेश के आईटी मंत्री नारा लोकेश ने बताया कि विशाखापट्टनम में तीन केबल लैंडिंग स्टेशन भी बनेंगे। इससे हाई-स्पीड डेटा ट्रांसफर हो सकेगा। राज्य में 1.6 गीगावॉट क्षमता के डेटा सेंटर निवेश को अंतिम रूप दिया जा चुका है। अगले 5 साल में 6 गीगावॉट क्षमता के डेटा सेंटर तैयार करने का लक्ष्य है। डेटा सेंटर नेटवर्क से जुड़े हुए कंप्यूटर सर्वर का एक बड़ा समूह है। बड़ी मात्रा में डेटा स्टोरेज, प्रोसेसिंग के लिए कंपनियों द्वारा इसका उपयोग किया जाता है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म फेसबुक, ट्विटर, वॉट्सऐप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, बैंकिंग, खुदरा, स्वास्थ्य सेवा, टूरिज्म और अन्य ट्रांजेक्शन में बहुत अधिक डेटा मिलता है, जिसके स्टोरेज के लिए डेटा सेंटर की जरूरत होती है। इन सुविधाओं में डेटा स्टोरेज, सूचनाओं की प्रोसेसिंग और दूसरे स्थान पर उसे पहुंचाना और कंपनी के एप्लिकेशन से जुड़े काम काज शामिल हैं। इसे किसी सर्वर की तरह मान सकते हैं।

पूर्व जेडीएस सांसद प्रज्वल रेवन्ना रेप मामले में दोषी करार

मैसूरु (एजेंसी)। बेंगलुरु की स्पेशल कोर्ट ने शुक्रवार को पूर्व जेडीएस सांसद और पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा का पोते प्रज्वल रेवन्ना को मेड से रेप मामले में दोषी ठहराया। कोर्ट शनिवार को सजा सुनाएगी। कोर्ट का फैसला आने के समय रेवन्ना भावुक दिखा और बाहर निकलते वक्त रो पड़ा। रेवन्ना के परिवार के फार्महाउस में काम करने वाली 47 साल की एक महिला ने पिछले साल अप्रैल में उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी। उसने रेवन्ना पर 2021 से कई बार रेप करने और किसी को भी घटना के बारे में बताने पर वीडियो लीक करने की धमकी देने का आरोप लगाया था। कोर्ट ने 18 जुलाई को इस मामले की सुनवाई पूरी की थी।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 35°c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 2 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

अमेरिका से एफ-35 फाइटर जेट नहीं खरीदेगा भारत

● अमरीका से डिफेंस डील नहीं चाहती है मोदी सरकार ● ट्रंप इसीलिए हुए नाराज, लगा दिया 25 फीसदी टैरिफ

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने अमेरिकी अधिकारियों को बता दिया है कि उसकी एफ-35 स्टील्थ फाइटर जेट खरीदने में दिलचस्पी नहीं है। ब्लूमबर्ग ने अपनी एक रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से ये जानकारी दी है। एफ-35 अमेरिका का 5वीं जेनरेशन का लड़ाकू विमान है।

इसे लॉकहीड मार्टिन कंपनी ने डेवलप किया है। रिपोर्ट में ये भी कहा गया है कि मोदी सरकार निकट भविष्य में अमेरिका के साथ कोई बड़ा रक्षा सौदा नहीं चाहती। सरकार रक्षा उपकरण बनाने वाली साझेदारी में ज्यादा दिलचस्पी रखती है। यानी, भारत टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और देश में उत्पादन की शर्त पर डिफेंस डील चाहता है। इस साल फरवरी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के व्हाइट हाउस दौरे के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारत को फाइटर जेट बेचने की पेशकश की थी। **टैरिफ का जवाब देने के रास्ते**

तलाश रही सरकार- रिपोर्ट में अमेरिका की ओर से लगाए गए टैरिफ का भी जिक्र है। इसमें कहा गया है कि भारत पर 25 फीसदी टैरिफ की घोषणा से भारत सरकार के अधिकारी हैरान और निराश थे। भारत सरकार 25 फीसदी टैरिफ के फैसले का जवाब देने के लिए विकल्प तलाश रही है। भारत से अमेरिका भेजे जाने वाले सामानों पर 7 अगस्त से 25 फीसदी लगेगा। व्हाइट हाउस ने 1 अगस्त की डेडलाइन खत्म होने से ठीक पहले ही इसका ऐलान किया। कस्टम्स और बॉर्डर प्रोटेक्शन को नए शुल्क वसूलने के लिए जरूरी बदलाव करने का समय मिल सके, इस कारण टैरिफ डेडलाइन को बढ़ाया गया है। भारत पर 25 फीसदी टैरिफ लगाने के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारत और रूस को डेड इकोनॉमी बताया। उन्होंने कहा- भारत और रूस अपनी अर्थव्यवस्था को साथ ले डूबें, मुझे क्या। इसके जवाब में रूस के पूर्व राष्ट्रपति मेदवेदेव ने कहा अमेरिकी राष्ट्रपति घबरा गए हैं। एफ-35 अमेरिका का 5वीं जेनरेशन का लड़ाकू विमान है। इसे लॉकहीड मार्टिन कंपनी ने डेवलप किया है। 2015 से यह अमेरिकी वायुसेना में शामिल है। ये पेंटागन के इतिहास का सबसे महंगा विमान है।

अब सिर्फ ढाई घंटे में पहुंच सकेंगे दिल्ली से जयपुर

● 120 की रफ्तार से सरपट दौड़ेगी गाड़ी, खुल गया एक्सप्रेसवे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे का हिस्सा बांदीकुई-जयपुर एक्सप्रेसवे को जनता के लिए खोल दिया गया है। इससे दिल्ली से जयपुर के बीच यात्रा का समय काफी कम हो गया है। अब सिर्फ ढाई घंटे में दिल्ली से जयपुर पहुंचा जा सकता है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) के अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षा जांच के बाद 15 जुलाई को दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे का हिस्सा बांदीकुई-जयपुर एक्सप्रेसवे को जनता के लिए खोल दिया गया है। इस नए मार्ग से सामान्य परिस्थितियों में दिल्ली-जयपुर यात्रा का समय घटकर मात्र ढाई से तीन घंटे रह जाने की उम्मीद है। गुरुग्राम स्थित आईटी कंसल्टेंट अमित यादव को बांदीकुई-जयपुर एक्सप्रेसवे से जयपुर पहुंचने में साढ़े पांच घंटे की बजाए साढ़े तीन घंटे लगे। यादव ने बताया कि पिछले सप्ताहांत हम जयपुर में अपने ससुराल गए। हमने नया रास्ता चुना और पूरी यात्रा बेहद आसान रही। न कोई भारी वाहन, न शहर का ट्रैफिक और न कोई रुकावट। हम सुबह सात बजे निकले और साढ़े दस बजे से पहले अपने गंतव्य पर पहुंच गए। इसी तरह, दिल्ली की मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव पल्लवी मेहरा ने पिता से मिलने के लिए नया रास्ता चुना।

मध्यप्रदेश पुलिस के जनजागरूकता अभियान नशे से दूरी-है जरूरी ने बनाया वर्ल्ड रिकॉर्ड

वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डर्स के सीईओ ने डीजीपी को भेंट किया सर्टिफिकेट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश पुलिस के नशे के विरूद्ध 15 जुलाई से 30 जुलाई 2025 तक चलाए गए नशे से दूरी-है जरूरी'' राज्यव्यापी जनजागरूकता अभियान ने अपनी व्यापकता, प्रभावशीलता तथा वृहद स्तर पर जनसहभागिता के चलते वर्ल्ड रिकॉर्ड कायम किया है। उल्लेखनीय है कि प्रदेश के 57 जिलों के 1175 थानों द्वारा संचालित इस अभियान में लगभग 23 लाख लोगों ने प्रत्यक्ष सहभागिता तथा सोशल मीडिया माध्यमों से 6.35 करोड़ लोगों ने सहभागिता की।

पुलिस मुख्यालय में शुक्रवार को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस के सीईओ तथा प्रेसीडेंट श्री संतोष शुक्ला ने पुलिस महानिदेशक श्री कैलाश मकवाणा और एडीजी नारकोटिक्स श्री के.पी. व्यंकटेश्वर राव से भेंट कर सर्टिफिकेट प्रदान किया। इस दौरान वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस संस्था की जनरल सेक्रेटरी डॉ. तिथि भल्ला

तथा एडिटर सुश्री अपूर्वा मेनन सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

डीजीपी श्री मकवाणा ने कहा कि प्रदेश के युवाओं और किशोरों को नशा मुक्त रखना हमारा शासकीय कर्तव्य ही नहीं नैतिक दायित्व भी है। इस अभियान के दौरान सभी पुलिस अधिकारी और कर्मचारी तथा अन्य सहयोगी विभाग, विभिन्न संगठनों के अथक प्रयास से यह अभियान जनआंदोलन बन गया। उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य कभी भी कोई विश्व रिकॉर्ड बनाना नहीं था बल्कि अधिक से अधिक लोगों को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करना उद्देश्य था। यदि इस अभियान को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है, तो यह सभी पुलिसकर्मियों, सहयोगी संस्थाओं और प्रदेश की जनता के समर्पण का परिणाम है। वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस के सीईओ श्री शुक्ला ने मध्यप्रदेश पुलिस के इस अनूठे जन जागरण अभियान की सराहना करते हुए कहा कि यह अभियान अपने उद्देश्य में सफल रहा। उन्होंने 13 सितंबर को ब्रिटिश पार्लियामेंट में आयोजित होने वाले सम्मान समारोह में डीजीपी श्री मकवाणा को आमंत्रित भी किया।

प्लेन क्रैश की जांच में ह्यूमन फैक्टर स्पेशलिस्ट्स शामिल

● वेस्टर्न मीडिया ने पायलट को जिम्मेदार ठहराया था

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री मुरलीधर मोहोल ने गुरुवार को संसद में बताया कि अहमदाबाद प्लेन क्रैश की जांच में ह्यूमन फैक्टर स्पेशलिस्ट्स को भी शामिल किया गया है। ये दुर्घटनाओं और अन्य सुरक्षा संबंधी घटनाओं के कारणों का एनालिसिस करते हैं और उन्हें रोकने के लिए डिजाइन में बदलाव का सुझाव देते हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जांच में सभी पहलुओं को देखा जा रहा है।

यह फैसला इसलिए अहम है क्योंकि अमेरिकी मीडिया हाउस, वॉल स्ट्रीट जनरल ने 17 जुलाई को पब्लिश रिपोर्ट में आशंका जताई थी कि विमान के पायलट कैप्टन सुमीत सभरवाल ने दोनों इंजनों में फ्यूल सप्लाई रोकी

थी। हालांकि, भारत के एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो और अमेरिका के नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड ने रिपोर्ट को गलत बताया था। एनटीएसबी ने कहा था कि अभी जांच चल रही है और किसी नतीजे पर पहुंचना सही नहीं होगा। अहमदाबाद में 12 जून को एअर इंडिया का प्लेन क्रैश हुआ था। हादसे में कुल 270 लोगों की जान गई थी। विमान में 242 लोग सवार थे। इनमें एक यात्री की जान बच गई थी।

हिंदू टाइगर फोर्स आतंकी संगठन, अब लगेगा बैन

● झारखंड के मंत्री इरफान अंसारी का बड़ा बयान

रांची (एजेंसी)। झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी ने हिंदू टाइगर फोर्स को आतंकवादी संगठन बताते हुए इसे बैन करने की बात कही है। मंत्री ने कहा कि इस

संगठन पर उनकी सरकार बैन लगाएगी और इससे जुड़े लोगों का पता लगाकर गिरफ्तार किया जाएगा। रामगढ़ में एक मुस्लिम युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत के मामले में इस संगठन पर आरोप लगाए जा रहे हैं। इरफान अंसारी ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान हिंदूवादी संगठन पर ऐक्शन की बात कही। उन्होंने कहा, हिंदू टाइगर फोर्स के नाम पर ये लोग हमारी भोलीभाली जनता को मार रहा है। यहां पर यह गुंडागर्दी नहीं चलेगी। मैं मुख्यमंत्री से मांग करता हूं कि जिसने भी इस संगठन की स्थापना की है, जो लोग भी इसमें शामिल हैं, जो मास्टरमाइंड है, सबपर कठोर कार्रवाई हो। अंसारी ने कहा कि यह किसने इजाजत दी कि आप दुकान से बच्चे को उठा लेते हैं, उसको मारते-पीटते हैं और अधमरा करके पुलिस को देते हैं। उन्होंने कहा, कौन है हिंदू टाइगर फोर्स। इसके संचालक कौन है। यह झारखंड है, हमारा आदिवासी राज्य है, लेकिन इसका मतलब यह थोड़ी की अपने मुताबिक चलाएंगे कानून को। यह तो आतंकवादी संगठन है, इस पर बैन तो लगेगा ही लगेगा। कठोर कार्रवाई हम लोग करने जा रहे हैं। दरअसल, रामगढ़ में आफताब अंसारी नाम के युवक पर एक आदिवासी लड़की के साथ नौकरी के नाम पर होटल बुलाकर आदिवासी लड़की के साथ रेप का आरोप लगा था।

ईसी ने जारी की नई लिस्ट, 65 लाख वोटर्स के कटे नाम

● सारण में 2.73 लाख, किशनगंज में 1.46 लाख नाम हटे

पटना (एजेंसी)। बिहार में चुनाव आयोग ने शुक्रवार को नई वोटर लिस्ट जारी कर दी है। इसे सभी 38 जिलों के डीएम के साथ राजनीतिक पार्टियों से साझा किया गया है। इसके साथ ही दोपहर 3 बजे से ये नई लिस्ट इलेक्शन कमीशन की वेबसाइट पर पब्लिश हो गई है। बिहार में कुल 65 लाख वोटर्स के लिस्ट से नाम कटे हैं। नई लिस्ट प्रदेश में चलाए गए घर-घर मतदाता सत्यापन अभियान के आधार पर तैयार की गई है। मतदाता को वोटर लिस्ट में नाम

जुड़ने, हटने या गलत जानकारी को लेकर शिकायत है, तो उन्हें सुधार का एक मौका मिलेगा। इसे लेकर 2 अगस्त से एक सितंबर 2025 तक विशेष कैंप लगाए जाएंगे, जहां मतदाता अपने दावे और आपत्तियां दर्ज करवा सकेंगे। किशनगंज की चारों विधानसभा में लगभग 1,45,913 कुल मतदाता का नाम लिस्ट में नही है। इसमें मृतक, पलायन कर चुके, लापता या डुप्लीकेट (2-2 जगह) नाम वाले मतदाता शामिल हैं। इनमें सबसे अधिक किशनगंज विधानसभा क्षेत्र में 49,340 मतदाताओं के नाम वोटर लिस्ट से काटे गए। वहीं, सबसे कम ठाकुरगंज में 29,277 मतदाताओं के नाम वोटर लिस्ट से हटाए गए। वहीं, बहादुरगंज में 36,574 और कोचाधामन में 30,722 वोटरों के नाम मतदाता सूची से काटे गए।

ईसी ने बताया हटाए गए नामों के पीछे का कारण

वोटर लिस्ट से हटाए गए नामों में वे लोग शामिल हैं, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। इसके अलावा स्थायी रूप से किसी अन्य स्थान पर स्थानांतरित हो चुके हैं या जिनके नाम दो बार दर्ज थे। आंकड़ों के अनुसार, 22 लाख मतदाताओं की मौत हो चुकी है, 36 लाख मतदाता अन्य स्थानों पर स्थानांतरित पाए गए हैं और 7 लाख लोग किसी नए जगह स्थायी निवासी बन चुके हैं।

आज से कई जगहों पर लगाए जाएंगे कैंप

लिस्ट में नए नाम जुड़वाने के लिए 2 अगस्त से एक सितंबर 2025 तक विशेष कैंप लगाए जाएंगे। बिहार के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी विनोद सिंह गुंजियाल के निर्देश के अनुसार, विशेष कैंप सभी प्रखंड सह अंचल कार्यालयों, नगर निकाय कार्यालयों, नगर परिषद/नगर निगम कार्यालयो में लगाए जाएंगे। 2 अगस्त से 1 सितंबर के बीच इन विशेष कैंपों में सुबह 10 से शाम 5 बजे तक काम होगा।

हमें एटम बम मिला है, फटेगा तो चुनाव आयोग नहीं दिखेगा

● वोटर लिस्ट पर राहुल गांधी ने इलेक्शन कमीशन को फिर धमकाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार में चुनाव आयोग की ओर से वोटर लिस्ट को लेकर चल रहे गहन पुनरीक्षण का विपक्ष की ओर से विरोध हो रहा है। संसद में इसके खिलाफ

विपक्षी दलों का लगातार आंदोलन जारी है। इसके अलावा विपक्ष की ओर से सदन में भी इसकी चर्चा की मांग हो रही है। इस बीच राहुल गांधी ने संसद परिसर में मीडिया से बात करते हुए बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि हमारे पास मतदाता सूची में गड़बड़ी को लेकर बड़ी चीजें हाथ लगी हैं, जिनका खुलासा हुआ तो चुनाव आयोग नहीं दिखेगा। राहुल गांधी ने कहा, 'हमें मध्य प्रदेश में संदेह था, लोकसभा चुनाव में संदेह था। महाराष्ट्र में हमारा शक और बढ़ गया। राज्य विधानसभा चुनाव के स्तर पर हमें लगा कि वोटों की चोरी हुई है। फिर हमने शोध किया। हमने अपने स्तर पर जांच कराई, जिसमें 6 महीने लगे। हमें जो मिला है, वह एटम बम है। वह जब फटेगा तो इलेक्शन कमीशन यहां दिखेगा नहीं।' राहुल गांधी ने कहा कि एक करोड़ वोटर विधानसभा चुनाव में जुड़े तो हमारा शक गहराया और फिर हमने अपने स्तर पर जांच कराई।

इस जांच में हमें जो मिला है, वह एटम बम है। इसके फटने पर चुनाव आयोग आपको दिखाई नहीं देगा। नेता विपक्ष ने कहा कि चुनाव आयोग भाजपा के लिए वोटों की चोरी कर रहा है। इसके पूरे सबूत हमारे पास हैं। उन्होंने कहा कि मैं तो कहता ही रहा हूं कि वोट चोरी हो रही है और अब इसके पक्के सबूत भी हमारे पास हैं। राहुल गांधी ने कहा कि हम जब खुलासा करेंगे तो देश में कहीं भी छिपने की जगह राहुल गांधी को नहीं मिलेगी।

ऐसे गैरजिम्मेदाराना बयानों पर ध्यान मत दीजिए

● वोट चोरी के दावे पर चुनाव आयोग का पलटवार

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के वोट चोरी के आरोपों पर इलेक्शन कमीशन की तरफ से पलटवार किया गया है। चुनाव आयोग ने कहा है कि ऐसे गैरजिम्मेदाराना बयानों पर ध्यान मत दीजिए। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने शुक्रवार को दावा किया था कि उनके पास इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि निर्वाचन आयोग 'वोट चोरी' में शामिल है। साथ ही वह यह सब बीजेपी के लिए कर रहा है। उन्होंने दावा किया कि उनके पास जो सबूत हैं वो 'एटम बम' की तरह हैं, जिसके फटने के बाद आयोग को कहीं छिपने की जगह नहीं मिलेगी। राहुल गांधी के आरोपों पर प्रतिक्रिया देते हुए चुनाव आयोग ने कहा कि चुनाव आयोग हर दिन लगाए जा रहे ऐसे निराधार आरोपों को नजरअंदाज करता है। साथ ही हर दिन दी जा रही धमकियों के बावजूद, वह निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से काम कर रहे सभी चुनाव अधिकारियों से ऐसे गैरजिम्मेदाराना बयानों पर ध्यान न देने के लिए कहता है।

यूपी में भीषण हादसा पांच लोगों की मौत

● ट्रक की टक्कर से कार के उड़ गए परखच्चे

एक ही परिवार के थे सभी मृतक, एक बची

मैनपुरी (एजेंसी)। यूपी के मैनपुरी में शुक्रवार की दोपहर भीषण सड़क हादसे में एक ही परिवार के पांच लोगों की मौत हो गई। ट्रक की टक्कर से कार सवार पति, पत्नी, दो बेटियों और पति के बहन की मौत हुई है। कार में छह लोग सवार थे। केवल 11 साल की एक बच्ची की जान बची है। हालांकि उसकी हालत भी गंभीर है। हादसा बेवर के ग्राम नगला ताल के पास हुआ। पूरा परिवार जन्मदिन की पार्टी मना कर आगरा से लौट रहा था। हादसे की जानकारी मिलते ही मौके पर आला अधिकारी भी पहुंचे और राहत कार्य तेज कराया। सभी शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घायल बच्ची को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सीएम योगी ने भी हादसे पर शोक जताया है। बताया जाता है कि कार सवार परिवार आगरा के भावना टावर में रहने वाले सेतु निगम से रिटायर इंद्रपाल सिंह के जन्मदिन मनाने आया था। इंद्रपाल की पोती का बर्थ डे मनाकर पूरा परिवार आगरा से छिबरामऊ लौट रहा था।

कोलकाता में अवैध रूप से रह रही बांग्लादेशी मॉडल गिरफ्तार

बिना वीजा के आई थी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की कोलकाता पुलिस की एंटी-राउडी स्क्वाड ने जादवपुर इलाके में छापा मारकर एक बांग्लादेशी मॉडल को गिरफ्तार किया है। उसके पास वीजा नहीं था, लेकिन आधार कार्ड, वोटर आईडी, राशन कार्ड बन गए थे। पुलिस ने कई दस्तावेज बरामद किए हैं।

पुलिस के मुताबिक, मॉडल का नाम शांता पॉल (24 साल) है। वह इस मकान में 2024 से एक पुरुष के साथ किराए पर रह रही थी। कोर्ट ने उसे 8 अगस्त तक पुलिस कस्टडी में भेज दिया है। कोलकाता पुलिस के जॉइंट कमिश्नर ने बताया- पुलिस को शिकायत मिली थी, जिसके बाद महिला को गिरफ्तार किया गया। छापेमारी के दौरान उसके फ्लैट से बांग्लादेशी पासपोर्ट, रीजेंट एयरवेज का कर्मचारी कार्ड, ढाका बोर्ड का परीक्षा प्रवेश पत्र, दो अलग-अलग पते वाले आधार कार्ड, वोटर आईडी और राशन कार्ड बरामद हुए। सूत्रों के मुताबिक, शांता पॉल बांग्लादेश में टीवी एंकर और अभिनेत्री रह चुकी है और कई ब्यूटी कॉन्टेस्ट में भी हिस्सा ले चुकी है। पुलिस अब चुनाव आयोग और फूड डिपार्टमेंट से संपर्क कर रही है।

सीएम ने किया स्मारिका विमोचन

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने

विधानसभा में जन संवेदना समिति द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन किया, इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष राधेश्याम अग्रवाल एवं सतीश सक्सेना सहित अन्य लोग शामिल हुए।

'हमारा भोपाल-स्वच्छ भोपाल' के अंतर्गत पौधारोपण

भोपाल। हिमांशु सोशल वेलफेयर सोसाइटी के सदस्यों के द्वारा आज पौधारोपण किया गया यह कार्य कलियासोत नदी के किनारे शिरडीपुरम साईं मंदिर के पास ग्रीन बेल्ट में पौधा रोपण किया गया। हिमांशु सोशल वेलफेयर सोसाइटी द्वारा 6 साल पहले एक मुहिम शरू की थीं। जिसका का नाम हमारा भोपाल-स्वच्छ भोपाल, ग्रीन भोपाल था। इसके अंतर्गत अभी तक संस्था द्वारा तकरीबन 160 पौधारोपण किया गया तथा लगातार उनकी देख रेख भी की उसके फलस्वरूप वह पौधे आज बड़े हो गए है। संस्था की इस मुहिम में संस्था के सदस्यों के अलावा शिरडीपुरम व अल्टीमेट कैम्पस के रहवासियों ने भी स्वंय आगे आके सहयोग किया। हिमांशु सोशल वेलफेयर सोसाइटी लगातार पर्यावरण को बचाने के लिए कई स्कूल और रहवासी सोसायटी में जागरूकता अभियान का कार्यक्रम आयोजित करती है।

हज-2026 के आवेदन की अंतिम तिथि 7 तक बढ़ी

विजयवाड़ा बना नया इम्बार्केशन पॉइंट, पासपोर्ट की वैधता 31 दिसंबर 2026 तक होना अनिवार्य

भोपाल (नप्र)। हज-2026 के लिए इच्छुक मुस्लिम समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण सूचना सामने आई है। हज कमेटी ऑफ इंडिया द्वारा हज आवेदन की अंतिम तिथि को 31 जुलाई से बढ़ाकर अब 7 अगस्त 2025 रात 11:59 बजे तक कर दिया गया है। यह जानकारी मध्य प्रदेश राज्य हज कमेटी के अध्यक्ष रफत वारसी (कैबिनेट मंत्री दर्जा) ने दी।

उन्होंने बताया कि हज कमेटी ऑफ इंडिया ने 31 जुलाई को परिपत्र क्रमांक-6 जारी कर यह निर्णय लिया है। साथ ही स्पष्ट किया गया है कि इसके बाद आवेदन की तारीख नहीं बढ़ाई जाएगी।

इस वर्ष एक अहम बदलाव यह भी किया गया है कि देश के 17 इम्बार्केशन पॉइंट्स के साथ अब विजयवाड़ा को भी 30 जुलाई से एक नया इम्वार्केशन पॉइंट घोषित कर दिया गया है। जिन आवेदकों ने पहले से आवेदन कर दिया है और अब विजयवाड़ा को अपनी पसंद के रूप में चुनना चाहते हैं, वे आवश्यक बदलाव हेतु राज्य हज कमेटी से संपर्क कर सकते हैं।

रफत वारसी ने आगे बताया कि आवेदन की अंतिम तिथि समाप्त होते ही हज यात्रियों के चयन के लिए डिजिटल कुर्रा प्रक्रिया की जाएगी। इस प्रक्रिया में चयनित होने वाले प्रोविजनल हज यात्रियों को 20 अगस्त 2025 तक 1,52,300 रुपए की अग्रिम राशि जमा करनी होगी। अधिक जानकारी के लिए इच्छुक आवेदक मध्य प्रदेश राज्य हज कमेटी के कार्यालय के दूरभाष क्रमांक 0755-2530139 पर संपर्क कर सकते हैं या आधिकारिक वेबसाइट का अवलोकन करें।

भोपाल डिवीजन की हर चौथी ट्रेन लेट

पैसेंजर-मेमू सबसे पीछे, लेट हुईं फिर भी वक्त पर पहुंचीं प्रीमियम ट्रेनें, रिपोर्ट में खुलासा

भोपाल (नप्र)। भोपाल रेल मंडल की जनवरी से जून 2025 तक की पंक्चुअलिटी रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि मंडल की ट्रेनों की औसत समय-पालन दर केवल 75.22त्र रही। इसका मतलब है कि हर चौथी ट्रेन देर से गंतव्य तक पहुंची। इस रिपोर्ट में प्रमुख ट्रेनों की समय-पालन स्थिति, रद्द/डायवर्ट/रीशेड्यूल की गई ट्रेनों और देरी के कारणों का ब्योरा दर्ज है।

प्रीमियम बनाम पैसेंजर ट्रेनों की समय-पालन दर
प्रीमियम ट्रेनों की औसत पंक्चुअलिटी: प्रतिशत
पैसेंजर ट्रेनों की औसत पंक्चुअलिटी: 58.39 प्रतिशत

पिछले छह महीनों में भोपाल रेल मंडल से कुल 37,250 प्रीमियम ट्रेनें शेड्यूल की गईं, जिनमें से 7,649 ट्रेनें लेट हुईं। वहीं, 8,267 पैसेंजर ट्रेनें चलाई गईं, जिनमें 3,202 ट्रेनें देर से चलीं।

प्रीमियम और हाई-प्रोफाइल ट्रेनें, जिनमें बिजनेस क्लास, मिडिल क्लास और वीआईपी यात्री सफर करते हैं, अपेक्षाकृत समय की पाबंद हैं। दूसरी ओर, मेमू और पैसेंजर ट्रेनें, जिनसे मजदूर, किसान, कर्मचारी और विद्यार्थी यात्रा करते हैं, रोजाना लेट होती हैं।

हर चौथी ट्रेन रहती है लेट- भोपाल मंडल में प्रतिदिन औसतन 2.25 लाख यात्री 87 स्टेशनों से सफर करते हैं। ये यात्री लगभग 230 से 250 ट्रेनों में यात्रा करते हैं।

प्रमुख स्टेशनों से यात्री संख्या इस प्रकार है-

भोपाल में बिना हेलमेट पेट्रोल नहीं मिल रहा

बगैर हेलमेट आए लोगों को लौटा रहे, टीमें निरीक्षण पर निकलीं

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 1 अगस्त से बिना हेलमेट के टूव्हीलर्स चालकों को पेट्रोल नहीं दिया जा रहा है। इसी तरह, बिना हेलमेट के सीएनजी गाड़ियों में भी गैस नहीं भरी जा रही है। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने 30 जुलाई को यह आदेश जारी किया था। पहले दिन समझाइश का दौर भी देखने का मिल रहा है।

सुबह 11 बजे तक कई पेट्रोल पंपों पर बिना हेलमेट के भी पेट्रोल दिया जा रहा था, लेकिन जब अफसरों की टीमें घूमने लगी तो पंप संचालकों ने भी सख्ती बरतना शुरू कर दी। रत्नागिरी पेट्रोल पंप पर कई स्टूडेंट्स को भी लौटा दिया गया। वे हेलमेट पहनकर नहीं आए थे। पंपकर्मी मंजू गुर्जर ने बताया कि वह 100 से ज्यादा लोगों को लौटा चुकी हैं। उनसे कहा कि पहले हेलमेट पहनकर आए, तभी पेट्रोल भरेंगे।

न्यू मार्केट में दो पेट्रोल पंप पर भी यही तस्वीर नजर आई। पांच नंबर बस स्टॉप, एमपी नगर के पेट्रोल पंप भी लोगों को लौटा दिया गया। सख्ती के चलते कई वाहन चालक दूसरों से हेलमेट मांगकर गाड़ी में पेट्रोल भरवाते भी नजर आए। बता दें कि भोपाल में कुल 192 पेट्रोल पंप है। जहां हर रोज पेट्रोल और डीजल की खपत 21 लाख लीटर है। इनमें से आधी से ज्यादा पेट्रोल की खपत होती है। इन पर अब बिना हेलमेट के

पेट्रोल नहीं दिया जाएगा। यानी, मोटरसाइकिल चलाते समय हेलमेट पहनना अनिवार्य हो गया है।

पेट्रोल पंप कर्मी मंजू गुर्जर ने बताया कि बिना हेलमेट हम पेट्रोल नहीं दे रहे हैं। सबको मना कर रहे हैं। सुबह से हम कम से कम 100 लोगों को बोल चुके हैं, हेलमेट पहनने के बाद ही पेट्रोल मिलेगा।

सरकार के आदेश के बाद निर्णय

दो दिन पहले कलेक्टर सिंह के आदेश में कहा गया है कि इस संबंध में समय-समय पर केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा भी निर्देश दिए गए हैं। साथ ही मप्र मोटर यान अधिनियम 1988 की धारा-129 में स्पष्ट प्रावधान है कि प्रत्येक दो पहिया वाहन सवारी और वाहन चालक अनिवार्य रूप से आईएसआई मार्क हेलमेट (सुरक्षात्मक टोप) पहनेगा।

बिना हेलमेट पहने टूव्हीलर्स चलाने से हादसे की संभावना बनी रहती है। हेलमेट से जान काफी हद तक बच सकती है। कलेक्टर ने एकपक्षीय आदेश पारित किया है।

इन्हें छूट मिली

प्रतिबंध मेडिकल संबंधी मामलों व आकस्मिक स्थिति में लागू नहीं होगा। यह प्रतिबंध अन्य किसी नियम/आदेश के प्रतिबंध के अतिरिक्त होंगे। यह आदेश 1 अगस्त 2025 से लागू होगा और 29 सितंबर-25 तक की अवधि में प्रभावशील रहेगा। इसका उल्लंघन करने वाले व्यक्ति, संस्था और संचालक के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता-23 की धारा 223 के तहत कार्रवाई की जा सकेगी।

बिना हेलमेट पहनकर आने वालों पर क्या कार्रवाई होगी?

पेट्रोल पंप डीलर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अजय सिंह ने बताया कि जिला प्रशासन बिना हेलमेट के पेट्रोल देने पर पेट्रोल पंप संचालक पर तो कार्रवाई करेगी, लेकिन जो पेट्रोल ले रहा है, उस पर क्या कार्रवाई होगी? सड़क पर पुलिस बिना हेलमेट वाले मोटरसाइकिल चालकों को नहीं पकड़ पा रही है। इस पर भी सख्ती से कार्रवाई होनी चाहिए।

पब में मिली युवती से शादी का वादा, फिर दुष्कर्म

भोपाल में ड्रग्स तस्कर यासीन पर एक और रेप केस, पीड़ित बोली- मुझे पीटा, वीडियो बनाए

भोपाल (नप्र)। भोपाल में ड्रग्स तस्कर यासीन अहमद उर्फ मछली पर रेप की एक और एफआईआर दर्ज की गई है। एक युवती ने शादी का झांसा देकर एक साल तक रेप करने का आरोप लगाया है। पहली बार एमपी नगर के एक फाइव स्टार होटल में रेप की वारदात को अंजाम दिया गया। इसके बाद अलग-अलग जगहों पर युवती के साथ ज्यादती की गई।

आरोप है कि यासीन युवती को बेरहमी से पीटता था। उसने मारपीट के वीडियो भी बनाए थे। इन्हीं वीडियो के आधार पर पुलिस ने युवती की पहचान की और उसकी काउंसलिंग कराने के बाद शुक्रवार को एमपी नगर थाने में एफआईआर दर्ज कराई गई है।

इससे पहले महिला थाना और अरेरा हिल्स थाने में भी यासीन के खिलाफ यौन उत्पीड़न और धोखाधड़ी की एफआईआर दर्ज की जा चुकी हैं।

यासीन अहमद उर्फ मछली

पब में हुई थी युवती की यासीन से मुलाकात- सब इंस्पेक्टर अर्चना तिवारी के मुताबिक 29 वर्षीय युवती प्राइवेट जॉब करती है। करीब एक साल पहले उसकी मुलाकात ड्रग तस्कर यासीन से एक पब में हुई थी। दोनों की बातचीत के बाद एक दूसरे से दोस्ती हो गई थी। दोनों ने एक-दूसरे को अपने मोबाइल नंबर शेयर किए थे।

बाद में आरोपी यासीन ने युवती को मिलने के लिए एक फाइव स्टार होटल में बुलाया, जहां उसने शादी करने का झांसा देकर उसके साथ रेप किया। उसके बाद से वह लगातार युवती का शोषण कर रहा था।

डॉ. नीलम के शरीर पर मिले 11 घाव, अभी हालत स्थिर

पानी का कैम्पर देने आता था आरोपी, कॉल पर सुना-डॉक्टर के देर से आने की बात

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर के श्रीकृष्णा परिसर की सातवीं मंजिल पर रहने वाली डॉ. नीलम सिंह पर बुधवार दोपहर एक युवक ने चोरी की नीयत से घुसकर चाकू से हमला कर दिया। अगर डॉ. नीलम 20 मिनट देर से घर पहुंचतीं, तो वह इस हमले से बच सकती थीं भले ही घर में चोरी हो जाती।

हमलावर मुकुल कहार ने यह सोचकर फ्लैट का दरवाजा खोला कि घर में कोई नहीं है। लेकिन जैसे ही सामने डॉ. नीलम आईं, उसने अचानक चाकू से वार कर दिए। डॉक्टर की सर्जरी के दौरान शरीर पर 11 घाव मिले। खास बात ये है कि आरोपी डॉक्टर के संपर्क में तब आया था जब वह 15 दिन तक उनके घर पानी की कैन पहुंचाने आता था। इसी दौरान उसने डॉक्टर के आने-जाने का समय जान लिया और मौका देखकर हमला कर दिया।

पानी देने आता था आरोपी- डॉ. नीलम के पति धीरेंद्र सिंह, बिजली विभाग में कार्यरत हैं। जब पानी सप्लाई करने वाला पुराना व्यक्ति आना बंद हो गया, तो धीरेंद्र ने गूगल पर नंबर खोजा और ऋषभ मिश्रा से बात हुई। ऋषभ ने मुकुल को पानी की कैन देने भेजा। मुकुल ने करीब 15 दिन तक रोज शाम को पानी पहुंचाया।

सोमवार को पानी की जरूरत खत्म होने पर धीरेंद्र ने ऋषभ से कह दिया कि अब पानी मत भेजें। मंगलवार को मुकुल आखिरी बार डॉक्टर नीलम के घर गया और वहां कोई और काम मिलने की उम्मीद जताई। नीलम ने कहा कि कोई काम नहीं है और वह घर चली जाए। उसी वक्त नीलम ने किसी से फोन पर कहा कि वह बुधवार को शाम 4 बजे तक घर पहुंचेंगी। मुकुल ने यह सुन लिया।

महिला का भेष लेकर पहुंचा आरोपी- बुधवार दोपहर करीब 3 बजे, मुकुल महिला के कपड़े और रेनकोट पहनकर अपार्टमेंट में घुसा। बारिश तेज थी और गार्ड अपने केबिन में बैठा था। मुकुल लिफ्ट से सीधा 7वीं मंजिल पर पहुंचा। उसे लगा कि डॉ. नीलम घर पर नहीं होंगी, लेकिन वे पहले ही लौट आई थीं।

जैसे ही मुकुल ने दरवाजा चाकू से खोलने की कोशिश की, नीलम ने अंदर से दरवाजा खोल दिया। मुकुल को देखकर उन्होंने शोर मचाया तो उसने उन्हें धक्का दिया और अंदर घुस गया। कुछ देर संघर्ष के बाद उसने नीलम पर चाकू से हमला कर दिया। नीलम के पेट और सीने में 11 बार किए गए, जिससे वे जमीन पर गिर गईं।

पुलिस ने डोनेट किया ब्लड

डॉ. नीलम, जो कि कुछ समय पहले तक सीनियर रेजिडेंट थीं और अब असिस्टेंट प्रोफेसर बनी हैं, को मेडिकल कॉलेज के आईसीयू में भर्ती किया गया। अभी तक 6 यूनिट ब्लड चढ़ाया गया, जिसमें से 2 यूनिट पुलिस के जवानों ने डोनेट किया। डॉक्टरों की टीम उनकी लगातार निगरानी कर रही है और उनका ऑपरेशन सफल रहा है।

कातिल पर चलेगा फास्ट ट्रायल

सीएसपी आशीष जैन ने बताया कि मुकुल ने पूछताछ में स्वीकार किया कि वह चोरी की नीयत से घुसा था। उसे लगा कि डॉक्टर घर पर नहीं होंगी, लेकिन समय से पहले लौटने पर उसने हमला कर दिया। मुकुल के खिलाफ फास्ट ट्रैक कोर्ट में केस चलेगा, ताकि उसे जल्दी और सख्त सजा मिल सके।

आईएमए ने किया हमले का विरोध

आईएमए अध्यक्ष डॉ. ऋचा शर्मा ने बताया कि नीलम को पेट और सीने में गहरे घाव आए हैं। उन्होंने हमले की कड़ी निंदा की है और समाज व डॉक्टरों की सुरक्षा की मांग की है। डॉक्टर नीलम को ऑपरेशन थिएटर में शिफ्ट किया गया और डॉक्टरों की टीम ने समय रहते सर्जरी की। आईएमए और मेडिकल कॉलेज के सभी डॉक्टरों ने इस हमले को कातिलाना हमला बताया है।

महिला के भेष में होने से नहीं पहचान पाए गार्ड

सुरक्षा गार्ड ने बताया कि मुकुल महिला के भेष में आया था और तेज बारिश के कारण किसी ने ध्यान नहीं दिया। अपार्टमेंट में रोज हाउस मेड आती हैं, इसलिए सभी पर नजर नहीं रखी जाती। मुकुल भी महिला समझकर आसानी से अंदर घुस गया।

एमपी में अगले 4 दिन भारी बारिश का अलर्ट नहीं

भोपाल-इंदौर में बूंदाबांदी का दौर रहेगा ; रायसेन में बाढ़ का असर रहा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में इस मानसूनी सीजन में 28 इंच बारिश हो चुकी है, जो कोटे की 74 प्रतिशत है। पूर्वी हिस्से यानी- जबलपुर, रीवा, शहडोल और सागर संभाग में मानसून जमकर मेहरबान रहा। इस वजह से बाढ़ के हालात भी बन गए। हालांकि, अब भारी बारिश का दौर थम गया है। स्ट्रॉन्ग सिस्टम की एक्टिविटी नहीं होने से अगले 4 चार दिन भारी बारिश का अलर्ट नहीं है।

इससे पहले 15 से अधिक जिलों में हल्की बारिश का दौर जारी था। इनमें भोपाल, बैतूल, दतिया, गुना, ग्वालियर, नर्मदापुरम, पचमढ़ी, दमोह, जबलपुर, मंडला, रीवा, बालाघाट, शाजापुर, सीहोर, देवास शामिल हैं। कहीं भी अति भारी या भारी बारिश नहीं हुई। मौसम विभाग के अनुसार, शुक्रवार को भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर-जबलपुर समेत पूरे प्रदेश में हल्की बारिश का दौर रह सकता है। कहीं भी भारी बारिश का अलर्ट नहीं है।

पूर्वी हिस्से में ज्यादा गिरा पानी- मौसम विभाग के अनुसार, पूर्वी हिस्से में अब तक 62 प्रतिशत और पश्चिमी हिस्से में 55 प्रतिशत पानी ज्यादा गिर चुका है।

रायसेन में बेतवा ने विकराल रूप लिया, खेत-मंदिर और पुल डूब गए- पिछले दो से तीन दिन तक रायसेन जिले में अति भारी बारिश का दौर रहा। गुरुवार को बारिश थमी, लेकिन हालात

गंभीर नजर आए। बेतवा नदी ने विशाल रूप ले लिया। आसपास के खेत, मंदिर और पुल डूब गए। हर तरफ सिर्फ पानी ही नजर आया।

श्योपुर में पार्वती नदी की बाढ़ में बहे चाचा-भतीजे के शव खेत में एक-दूसरे से लिपटे हुए मिले। शिवपुरी में माधव टाइगर रिजर्व की सांख्य सागर झील ओवरफ्लो हो गई। सागर के देवरीकलां में संजय नगर स्थित रामघाट नाले में एक महिला बह गई। एनडीआरएफ की 30 सदस्यीय टीम पहुंची, जो सर्चिंग करती रही। वंदना साहू मंगलवार को सुबह 9 बजे नाग पंचमी पर रामघाट मंदिर में पूजन करके घर लौट रही थी। पुल पर से गुजरने के दौरान पानी के तेज बहाव में बह गई थी।

खंडवा में इंदिरा सागर बांध के 12 गेटों से पानी छोड़ा गया। इनमें 8 गेट 4 मीटर और 4 गेट साढ़े तीन मीटर तक खोले गए। पावर स्टेशन पर पूरी क्षमता के साथ बिजली उत्पादन किया जा रहा है। इसके चलते नर्मदा में बाढ़ के हालात हैं।

खंडवा के मोरटक्का में प्राचीन जाबरेश्वर महादेव मंदिर में पानी पहुंच गया। लोगों का कहना है कि बरसों से देखते आ रहे हैं कि नर्मदा मैया हर साल जबरेश्वर महादेव का जलाभिषेक करने आती हैं।

बेटे ने मृत माना, 42 साल बाद मिले बुजुर्ग पिता

डीएसपी की सोशल मीडिया पोस्ट के बाद मुहिम, भोपाल के वृद्धाश्रम में मिले रिटायर्ड एआई

भोपाल (नप्र)। भोपाल में डीएसपी संतोष पटेल की सोशल मीडिया पोस्ट से बैतूल में एक बेटे को उसके लापता पिता 42 साल बाद मिल गए। बेटा चार दशक से यह मानकर चला कि उसके पिता अब इस दुनिया में नहीं रहे। 15 जुलाई को डीएसपी पटेल अपनी पत्नी का जन्मदिन मनाने भोपाल के आसरा वृद्धाश्रम पहुंचे थे। यहां उनके ध्यान एक बुजुर्ग की ओर गया। बातचीत में उन्होंने अपना नाम पूरन सिंह बताया और दावा किया कि वे कभी पुलिस विभाग में सब-इंस्पेक्टर थे। उन्होंने अपनी उम्र करीब 85 साल बताई।

उन्होंने इस मुलाकात का एक वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर शेयर किया। वीडियो ने बैतूल के कुछ जागरूक नागरिकों का ध्यान खींचा। कोठी बाजार में रहने वाले रवि त्रिपाठी ने पूरन सिंह के परिवार का पता लगाने का बीड़ा उठाया। इसके बाद कडियां जुड़ते गई और बुजुर्ग के परिवार का पता चल गया।

8 महीने पहले आए थे वृद्धाश्रम- आश्रम के संचालक मोहन सोनी और व्यवस्थापक समीना मसीह ने बताया कि पूरन सिंह मानसिक रूप से अस्थिर हालत में करीब आठ महीने पहले आश्रम आए थे। धीरे-धीरे पता चला कि उनका असली नाम पूरन सिंह ठाकुर है। वो कभी ग्वालियर, सागर और भिंड जैसे शहरों में पुलिस अधिकारी रह चुके हैं।

बैतूल के बुजुर्गों से मिला पहला क्लू- रवि त्रिपाठी ने सबसे पहले अपने मित्र गजानन सूर्यवंशी से बात की। गजानन ने उन्हें रात 10 बजे वीडियो भेजा और एक संदिग्ध पहचान की बात बताई। रवि ने तत्परता दिखाते हुए इलाके के बुजुर्गों

से संपर्क किया। कोठी बाजार के पास रहने वाले सुरेंद्र सिंह ठाकुर से पूछताछ की, जिन्होंने बताया कि एक पूरन नामक फुटबॉल खिलाड़ी उस क्षेत्र में रहता था और उसके पिता पुलिस विभाग में थे। इसके बाद रवि त्रिपाठी ने बैतूल के जाने-माने फुटबॉलर इकबाल भाई से संपर्क किया।

फुटबॉलर ने की पूरन सिंह की पहचान- इकबाल भाई ने पहचान की और बताया कि यह व्यक्ति दरअसल, पूरन सिंह धुर्वे उर्फ पूरन गोंड हैं, जो टेमनी गांव के रहने वाले थे। इसके बाद रवि त्रिपाठी टेमनी गांव गए। वहां प्रेम वर्मा व जॉनसन हेराल्ड (सेवानिवृत्त एसआई) से संपर्क किया। जब उन्होंने पूरन सिंह की तस्वीर देखी तो तुरंत पहचान लिया और कहा हां, ये पूरन हैं साहब। हम इनके साथ 18-20 साल की उम्र में फुटबॉल खेला करते थे।

दोस्तों ने बताया कि-मानिसक संतुलन खो बैठे थे- जॉनसन हेराल्ड ने रवि त्रिपाठी को बताया कि पूरन सिंह का चयन सब इंस्पेक्टर के तौर पर हुआ था। उनकी ट्रेनिंग सागर में हुई और बाद में पोस्टिंग ग्वालियर में। वहां से उनका ट्रांसफर भिंड हुआ। उस समय वे सरकारी डाक लेकर भोपाल आए थे, जहां पर मोटरसाइकिल लोन की किसी योजना के लिए उन्होंने आवेदन किया।

इसी दौरान उनकी पुश्तैनी ज़मीन बैतूल में एक डैम परियोजना की डूब क्षेत्र में आ गई। मुआवजा लेने वे बैतूल वापस गए। बैतूल में रहते हुए वे शराब की लत में फंस गए। उनकी पत्नी का एक सड़क हादसे में देहांत हो गया, जिससे उन्हें गहरा मानसिक आघात पहुंचा। फिर वे पूरी तरह से मानसिक संतुलन खो बैठे और कहीं चले गए। इसके बाद उनका कोई पता नहीं चल सका।

पैंतीस साल तक किसी परिचित के यहां रहे- दोस्त और बैतूल के रहने वाले लोग व आश्रम के रहने वाले लोगों के अनुसार पता चला कि भोपाल के आसपास एक मुस्लिम परिवार के खेत में वे करीब 30-35 साल तक रहे। उस परिवार के मुखिया के निधन के बाद, उनका बेटा उन्हें आसरा आश्रम छोड़ गया। हालांकि इसको लेकर बहुत सारी बातें अभी भी साफ नहीं हैं। पूरन सिंह खुद कुछ इस बारे में सही से नहीं बता पा रहे हैं कि वह तीस से पैंतीस साल तक कहां रहे।

बेटा बोला - सोचा न था पिताजी मिलेंगे

पूरन सिंह जब गुम हुए थे, तब उनके बेटे राज सिंह की उम्र महज डेढ़ साल थी। उन्हें उनके चाचा ने पाला। परिवार ने पूरन सिंह को मृत मान लिया और खोजबीन की कोई खास कोशिश नहीं की गई। राज सिंह की परवरिश भोपाल और फिर महाराष्ट्र के मुलताई के पास हुई। अब वे एक मेडिकल स्टोर में काम करते हैं। जब राज सिंह को पता चला कि उनके पिता जीवित हैं और भोपाल में हैं तो कहा- कभी सोचा भी नहीं था कि पिताजी मिलेंगे। नानी का देहांत हो चुका है, और बाकी रिश्तेदारों से भी कभी पूरी जानकारी नहीं मिली। मुझे बस इतना पता था कि वो कहीं खो गए थे।

आश्रम संचालक ने कहा- 8 महीने की सेवा

आसरा वृद्धाश्रम की व्यवस्थापक समीना मसीह ने बताया कि पूरन सिंह को जब लाया गया था, तो वे लावारिस हालत में थे। कहीं बेसुध पड़े हुए मिले थे। वो बार-बार यही बताते थे कि वे पुलिस में थे और ग्वालियर के किसी गांव से हैं, लेकिन बाकी कुछ याद नहीं था। न बेटे का नाम, न पत्नी का। उन्होंने कहा कि आठ महीनों से आश्रम में उनकी पूरी सेवा की गई। डॉक्टरों की मदद से उनकी हालत कुछ सुधरी और तभी धीरे-धीरे बातें सामने आने लगीं।

संपादकीय

भगवा आतंक का नरेटिव खारिज

महाराष्ट्र के माले गांव ब्लास्ट केस मे 17 साल बाद आए विशेष एनआईए अदालत के फैसले ने जहां भगवा आतंकवाद' के सुनियोजित नरेटिव को खारिज कर दिया है, वहीं इस सवाल को जिंदा रखा है कि इस आंतकी हमले में 6 लोगों को आखिर किसने मारा? पूरी जांच इस मामले में मौन लगती है। हालांकि इस मामले में बरी आरोपी और भाजपा इसलिए खुश हैं कि तत्कालीन संप्रग सरकार ने परोक्ष रूप में देश में जारी आतंकवाद का बचाव करने के लिए 'भगवा आतंकवाद' जैसा नरेटिव गढ़ा, इससे यूपीए और खासकर कांग्रेस को राजनीतिक फायदा मिलने की बजाए भारी नुकसान ही हुआ, जिसकी भरपाई अभी भी नहीं हो पा रही है। अदालत ने अपने फैसले में साफ कहा कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता। यह ठीक भी है कि अगर मालेगांव ब्लास्ट में कथित भगवा आतंकवाद था तो एक पखवाड़े जिस मुंबई बम ब्लास्ट कांड में सभी आरोपी बरी हुए, वो क्या था? मालेगांव बम ब्लास्ट की जांच पहले महाराष्ट्र एटीएस कर रही थी, जिसके तत्कालीन मुखिया हेमंत करकरे को मालेगांव ब्लास्ट के कुछ महीने बाद ही हुए मुबंई आतंकी हमले में मार दिया गया था। 2011 में इसकी जांच एनआईए को सौंपी गई। मालेगांव की एक मस्जिद के बाहर हुए आतंकी हमले में 6 लोगों की मौत और सौ से ज्यादा लोग घायल हुए थे। इस कांड के सबसे चर्चित आरोपी साध्वी प्रज्ञा सिंह और लेफ्टिनेंट कर्नल प्रसाद पुरोहित थे, जिन पर आरोप था कि वो संघ से जुड़े हैं और उन्होंने 'अभिनव भारत' नामक संस्था बनाकर हिंदू युवाओं को आतंकी हमले की ट्रेनिंग दी थी। इस मामले में चार एजेंसियां बदलीं। 2014 में दिल्ली में मोदी सरकार के सत्तासीन होने के बाद इस बात का अंदाजा हो गया था कि इस मामले में दोष सिद्ध करना कठिन होगा। इस प्रकरण के 323 गवाहों में से 37 अदालत में बयान से मुकर गए। अपना फैसला सुनाते हुए विशेष एनआईए जज ने कहा कि सरकारी पक्ष यह तो साबित कर सका कि बम विस्फोट हुआ था, लेकिन यह साबित नहीं कर पाया कि बम मोटरसाइकिल पर ही लगाया गया था।

दावा किया गया था कि लेफ्टिनेंट कर्नल पुरोहित कश्मीर से आरडीएक्स लेकर आए थे, लेकिन इसका कोई ठोस सबूत नहीं मिला। यह भी साबित नहीं हो सका कि पुरोहित ने अपने घर पर बम तैयार किया था। रमज़ान की वजह से उस समय इलाक़ा बंद था, और यह स्पष्ट नहीं हो सका कि मोटरसाइकिल वहाँ कैसे पहुँची। ऐसा कहा गया कि इंदौर, उज्जैन और नासिक जैसे स्थानों पर साज़िश रचने के लिए बैठकें हुई थीं, लेकिन ऐसी बैठकों का कोई विश्वसनीय प्रमाण अदालत में पेश नहीं किया जा सका। अदालत ने यह भी पाया कि जाँच अधिकारियों ने फ़ोन रिकॉर्ड की जांच के लिए अनुमति नहीं ली थी। अभिनव भारत मामले में पुरोहित, राहिरकर और उपाध्याय के बीच कुछ वित्तीय लेनदेन के प्रमाण तो मिले, लेकिन यह साबित नहीं हो सका कि उस धन का उपयोग आतंकवादी गतिविधियों में किया गया था। कोर्ट ने कहा कि यह यह एक गंभीर अपराध था, लेकिन फैसला सुनाने के लिए ठोस और निर्विवाद प्रमाण की आवश्यकता होती है। केवल नैतिक आधार पर किसी को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। इस फैसले के खिलाफ एनआईए बड़ी अदालत में जाएगी, इसकी संभावना नहीं है, लेकिन पीड़ित पक्ष जा सकता है। अलबत्ता इस फैसले के बाद कांग्रेस नेताओं के सुर जरूर बदल गए हैं। जिस भगवा आंतकवाद की बात उन दिनों जोर-शोर से कही जा रही थी, उस पर ये नेता अब दाएं बाएं हो रहे हैं। क्योंकि भगवा आतंकवाद के लपेटे में सभी हिंदुओं को लेना बहुत बड़ी राजनीतिक चूक थी।

अमेरिकी हस्तक्षेप से मुक्ति की दिशा

वास्तव में शांतिप्रिय मध्य एशिया में तबाही,बर्बादी व अशांति की इबारत लिखने वाला अमेरिकी संरक्षित इस्राईल ही है। 7 अक्टूबर 2023 को जब से दक्षिणी इस्राइल पर हमास द्वारा हमले किये गये और 251 लोगों को बंधक बनाया गया उसके बाद इस्राईली सेना (आईडीएफ़) ने हमास की आतंकी कार्रवाई के जवाब में जिस तरह ग़ाज़ा पट्टी में बड़े पैमाने पर सैन्य कार्रवाई शुरू की और आज तक जारी है उसने इस्राईल व अमेरिका के अमानवीय चेहरे को पूरी तरह उजागर कर दिया है। ग़ाज़ा में बर्बरता और अत्याचार की हर सीमाओं को इस्राईल पार कर चुका है। रिहाइशी बस्तियों अस्पतालों स्कूलों शरणार्थी कैंपों धर्मस्थलों आदि को खंडहर बनाने के बाद अब भूखे निहत्थों को मार रहा है।

नजरिया

तनवीर जाफ़री

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

इस्राईल को लंबे समय से मिल रहे अमेरिकी संरक्षण से वैसे तो पूरी दुनिया भली भांति वाक़िफ़ है। परन्तु अब इस अमेरिकी संरक्षण के चलते इस्राईल ख़ासतौर से ग़ज़ा में जिस तरह मानवता की लगातार बर्बर हत्या करता जा रहा है उसे देखकर दुनिया के अधिकांश देश न केवल इस्राईल के ख़िलाफ़ होते जा रहे हैं बल्कि उन्हें इस्राईल को दिया जाने वाला अमेरिकी संरक्षण भी अब रास नहीं आ रहा है। वास्तव में शांतिप्रिय मध्य एशिया में तबाही,बर्बादी व अशांति की इबारत लिखने वाला अमेरिकी संरक्षित इस्राईल ही है। 7 अक्टूबर 2023 को जब से दक्षिणी इस्राइल पर हमास द्वारा हमले किये गये और 251 लोगों को बंधक बनाया गया उसके बाद इस्राईली सेना (आईडीएफ़) ने हमास की आतंकी कार्रवाई के जवाब में जिस तरह ग़ाज़ा पट्टी में बड़े पैमाने पर सैन्य कार्रवाई शुरू की और आज तक जारी है उसने इस्राईल व अमेरिका के अमानवीय चेहरे को पूरी तरह उजागर कर दिया है। ग़ाज़ा में बर्बरता और अत्याचार की हर सीमाओं को इस्राईल पार कर चुका है। रिहाइशी बस्तियों अस्पतालों स्कूलों शरणार्थी कैंपों धर्मस्थलों आदि को खंडहर बनाने के बाद अब भूखे निहत्थों को मार रहा है।

ख़बर है कि ग़ाज़ा में ग़ाज़ा ह्यूमनटेरियन फ़ाउंडेशन (जीएचएफ़) की ओर से बांटा जा रहा खाना बहुत कम लोगों तक पहुंचने के कारण वहां भुखमरी की स्थिति पैदा हो गई है। कई बार ऐसी अमानवीय घटना भी घटी कि जब जीएचएफ़ के भोजन वितरण केंद्र पर मदद लेने के लिए भूख से तड़पते बच्चे व महिलायें भोजन की ख़ातिर आकर लाइन में लगे उसी समय उन पर इसराइली सुरक्षा बलों ने गोलियां चला दीं जिससे दर्जनों लोग मरे गये। कई बार इस्राईली सुरक्षा बलों द्वारा भूखे शरणार्थियों को खाना देने के लिये बुलाया गया,बाद में लाइन में खड़े होने के बाद उनपर गोलीबारी कर अनेक लोगों की हत्या कर दी गई। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय के अनुसार पिछले दो महीनों में भोजन हासिल करने की कोशिश कर रहे एक हज़ार से अधिक फ़िलस्तीनी, इस्राईली हमलों में मारे जा चुके हैं। इनमें से कम से कम 766 लोगों की मौत उन चार वितरण केंद्रों के आसपास हुई है, जिन्हें जीएचएफ़ संचालित करता है। इसके अलावा 288 लोगों की मौत संयुक्त राष्ट्र और अन्य सहायता केंद्रों के पास हुई है। सौ से अधिक सहायता संगठनों और मानवाधिकार समूहों का कहना है कि ग़ाज़ा में बड़े पैमाने पर मानव जनित भुखमरी फैल रही है। अंतरराष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा विशेषज्ञों ने इन हालात के लिए इस्राईल को ज़िम्मेदार ठहराया है क्योंकि वही फ़िलस्तीनी क्षेत्रों में भेजी जाने वाली सप्लाई को नियंत्रित करता है।

आम लोग ही नहीं बल्कि ग़ाज़ा में युद्ध की रिपोर्टिंग करने वाले अनेक स्थानीय व विदेशी पत्रकार व उनका परिवार भी भुखमरी का सामना करने को

मजबूर है। कुछ पत्रकार तो इस हद तक असहाय हो चुके हैं कि वे अपने मासूम असहाय बच्चों व परिवार के लिए भोजन तक नहीं जुटा पा रहे हैं। ग़ाज़ा में काम करने वाले कुछ पत्रकार तो अपनी जान की बाज़ी लगाकर लाइनों में लगकर चैरिटी किचन से खाना ले रहे हैं। उनके बच्चे दिन में सिर्फ़ एक बार दाल, चावल या पास्ता खा कर गुज़ारा करने को मजबूर हैं। कुछ पत्रकारों ने तो यहाँ तक बताया कि उन्होंने भूख दबाने के लिए नमक मिला पानी पीना शुरू कर दिया है। ज़रा सोचिये जिन पत्रकारों की बदौलत दुनिया को इस्राईली सेना के ज़ुल्म और ग़ाज़ा के लोगों की बेबसी व बर्बादी की ख़बर सुनाई व दिखाई देती थी अगर वही पत्रकार व उनका परिवार सुरक्षित नहीं रहेगा तो अमेरिकी संरक्षित इस्राईल के काले करतूत दुनिया तक कैसे पहुंचेंगे ? इन्हीं हालात में अनेक अंतर्राष्ट्रीय राहत संगठन और मानवाधिकार समूह बड़े पैमाने पर भुखमरी फैलने की चेतावनी दे रहे हैं।

एक ओर तो इस्राईल-अमेरिका फ़िलिस्तीनियों के अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाले हमास को आतंकी संगठन बताकर उसकी आड़ में पूरे फ़िलिस्तीन पर नियंत्रण हासिल करने की फ़िराक़ में है तो दूसरी ओर यही इस्राईल-अमेरिका अहमद हुसैन अल-शरा, जिसे अबू मोहम्मद अल-जुलानी के नाम से भी जाना जाता है,को सीरिया में बशर अल असद का तख़्ता पलटकर उसे अंतरिम राष्ट्रपति बना देता है। यह वही जुलानी है जिस पर कुछ समय पहले तक अमेरिका ने दस मिलियन डॉलर का ईनाम घोषित कर रखा था। क्योंकि वह अलक़ायदा से जुड़ा था। 2017 में उसने अन्य कई आतंकी संगठनों के साथ मिलाकर हयात तहरीर अल-शाम HTS नामक संगठन बना लिया था। अमेरिका ने HTS को आतंकी लिस्ट में भी रखा था। अब अमेरिका ने उसके संगठन HTS को आतंकी लिस्ट से भी हटा दिया है । गोया जो व्यक्ति अमेरिका के हर विभाजनकारी इरादों में साथ रहे वह उसके लिए आतंकवादी नहीं और जो उसके और इज़रायल के ख़िलाफ़ हो या अपनी स्वतंत्र नीति रखता हो वह आतंकवादी घोषित हो जाता है चाहे वह ईरान जैसा संप्रभुता संपन्न राष्ट्र ही क्यों न हो ?

बहरहाल, अमेरिका को सर्वशक्तिमान मानने वाले व अमेरिकी रहमो करम पर जीने वाले कुछ अमेरिकी पिट्ठू देशों की शासकों व तानाशाहों की बात छोड़ दें तो पूरा विश्व ख़ासकर मध्य एशियाई देश इस बात को समझ चुके हैं कि अब समय आ गया है कि किसी भी तरह इस्राईल को सबक़ सिखाया जाये और मध्य एशियाई क्षेत्रों को अमेरिकी हस्तक्षेप से मुक्ति दिलाई जाये। ईरान का भय दिखाकर सुन्नी शिया मतभेदों को बढ़ावा देना दरअसल अमेरिका की सुन्नी देशों के प्रति हमदर्दी नहीं बल्कि एक बड़ी चाल है जिसे मुस्लिम जगत अब बख़ूबी समझ चुका है। मुस्लिम जगत जुलानी की आड़ में सीरिया को बर्बाद करने की साज़िश को भी समझ रहा है। परन्तु ख़बर यह भी है कि सीरियाई जनता भी अमेरिका इस्राईल के सीरिया के प्रति नापाक इरादों को भांप कर एकजुट होने लगी है। मध्य एशियाई क्षेत्रों को अमेरिका से मुक्त कराने के शुरुआत संकेत मिलने लगे हैं। ईरान ने गत 23 जून को क़तर की राजधानी दोहा स्थित अमेरिकी सैन्य अड्डे अल-उदीद एयरबेस पर मिसाइलें दाग़ कर तथा इराक़ और सीरिया में भी अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बना कर यह चेतावनी दे दी है कि अमेरिकी सैन्य अड्डे मध्य एशियाई क्षेत्रों में सुरक्षित नहीं हैं। साथ ही इराक़ी प्रतिरोध समूहों, विशेष रूप से कताइब हिज़्बुल्लाह, ने इराक़ी सरकार को यह चेतावनी जारी कर दी है कि वह अमेरिकी सेना को दो महीने के भीतर बगदाद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा और ऐन अल-असद बेस जैसे इराकी सैन्य ठिकानों, से पूरी तरह से हटने के लिए कहे। इराक़ी प्रधानमंत्री मोहम्मद शिया अल-सुदानी को इस संबंध में पहले से सहमति के आधार पर कार्रवाई करने के लिए 'पर्याप्त समय' दिया गया था, और अब केवल दो महीने बचे हैं। यानी सितंबर 2025 के अंत तक अमेरिका को इराक़ छोड़ने की चेतावनी दे दी गयी है। इस चेतावनी में यह भी कहा गया है कि अगर यह कार्रवाई समय सीमा में पूरी नहीं हुई, तो उनकी 'अलग राय' होगी, हालांकि उन्होंने 'अलग राय' को स्पष्ट नहीं किया।इस तरह की अनेक छोटी बड़ी घटनाओं व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रही गोलबंदी को देखते हुये इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि मध्य एशिया अमेरिकी हस्तक्षेप से मुक्ति के प्रयास की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

बिहार में बाहरी वोटर, माजरा क्या है?

विधानसभा चुनाव

योगेन्द्र यादव

लेखक प्रख्यात चुनाव विश्लेषक हैं।

यूँ तो हमारे देश में शिगूफ़ों की कोई कमी नहीं रही है, लेकिन पिछले दस साल में तो जैसे शिगूफ़े खिलाना एक राष्ट्रीय शगल हो गया है। आपको कोविड का दौर याद है? लॉकडाउन की शुरुआत में ही दिल्ली की 'निजामुद्दीन मरकज़' में 'तबलीग़ी जमात' के एक सम्मेलन से कोविड फैलाने की अफ़वाह चली थी। सरकारी और दरबारी हर स्रोत से खूब शिगूफ़े उछाले गए थे। अच्छे-अच्छे इस ख़बर का शिकार हो गए थे। फिर पाँच साल बाद इस महीने अदालत का फ़ैसला आया कि सारी बात कोरी गप्प थी। पुलिस की चार्जशीट में कोविड का जिक्र भी नहीं था, लेकिन तब तक किसे परवाह थी। खेल ख़त्म हो चुका था, 'टीआरपी' (टार्गेट रेटिंग प्वाइंट) हज़म हो चुकी थी।

ठीक इसी तर्ज़ पर अब बांग्लादेशी वोटरों का शिगूफ़ा उछाला जा रहा है। झारखंड के चुनाव में भाजपा के प्रभारी हेमंत बिस्वा सरमा ने खूब खुलकर बांग्लादेशी वोटर का कार्ड खेल। चला नहीं। किसी को ढूँढने पर भी झारखंड में बांग्लादेशी नहीं मिलता था। यही खेल रोहिंग्या के नाम पर दिल्ली विधानसभा चुनाव में हुआ। पिछले हफ़्ते यही खेल हरियाणा के गुड़गांव में खेला गया। पता लगा कि पुलिस की इस मुहिम के शिकार हुए लगभग सभी लोग बांग्लाभाषी भारतीय नागरिक थे, गरीब थे, मजदूरी कर अपना पेट पालते थे। अब यही खेल बड़े पैमाने पर बिहार में खेला जा रहा है। जबसे बिहार में मतदाता सूची के 'विशेष गहन पुनरीक्षण' (एसआईआर) की शुरुआत हुई है, तबसे मीडिया में यह अभियान चल रहा है कि इस पुनरीक्षण का असली उद्देश्य बिहार में विदेशी नागरिकों की पहचान कर वहाँ की वोटर लिस्ट में घुसे बांग्लादेशी और म्यांमार के नागरिकों को बाहर निकालना है।

बिहार के पूर्वोत्तर की पूर्णिया कमिश्नरी में चार जिले हैं – पूर्णिया, कटिहार, अररिया और किशनगंज। एक तरफ़ नेपाल और दूसरी तरफ़ बंगाल से सटे इस क्षेत्र को 'सीमांचल' कहा जाता है। यहाँ मुस्लिम जनसंख्या बाक़ी बिहार से बहुत ज़्यादा है। कुछ इलाक़ों में मुस्लिम बहुमत भी है। पिछले कई हफ़्तों से 'चुनाव आयोग' के 'सूत्रों' के हवाले से यह दावा किया जा रहा है कि वोटर लिस्ट के पुनरीक्षण का काम दरअसल 'सीमांचल' में बड़े पैमाने पर बांग्लादेशी घुसपैठियों को निकालना है। वैसे यह पूछा जाना चाहिए था कि सिर्फ चार जिलों के कुछ घुसपैठियों को खोज निकालने के लिए पूरे बिहार के आठ करोड़ मतदाताओं को परेशान करने की क्या जरूरत थी? 'चुनाव आयोग' के पास अधिकार है कि वो चंद जिलों या तहसीलों की वोटर लिस्ट का पुनरीक्षण कर सकता है। वो क्यों नहीं किया? पूछा यह भी जाना चाहिए था कि पिछले 11 वर्षों से इस देश की सरकार कौन चला रहा है? अगर अब भी वोटर लिस्ट में धांधली है तो जिम्मेदारी किसकी है?

खैर, इस सब तर्क-कुतर्क को छोड़कर ठंडे दिमाग़ से इस सवाल पर विचार करें, ताकि दिन-रात उछाले जाने वाले शिगूफ़ों से बच सकें। सबसे पहले तो बिहार का नक्शा देखिए और पूछिए कि बिहार में अगर अवैध विदेशी घुसेंगे तो कहाँ से आयेंगे? पलक झपकते ही आप जान जाएँगे कि बिहार की सीमा बांग्लादेश से नहीं, नेपाल से मिलती है। बेशक 'सीमांचल' से बांग्लादेश बहुत दूर नहीं है और वहाँ से आवाजाही भी असंभव नहीं है, लेकिन नेपाल से तो कोई तुलना ही नहीं हो सकती। बिहार के सात जिलों की 726 किमी सीमा नेपाल से लगती है जो अभी भी खुली है और नेपाल के नागरिकों को भारत में बिना वीजा के घुसने और रहने का अधिकार है। दोनों तरफ़ रोटी-बेटी के संबंध हैं। नेपाल की लाखों बेटियां भारतीय बहू हैं और बरसों से वोट दे रही हैं। जरा सोचिए, अवैध विदेशियों की सारी चर्चा बांग्लादेश की क्यों है, नेपाल की क्यों नहीं? चिंता विदेशी की है या मुसलमान की?

नक्शे को छोड़िये, आर्थिक स्थिति देख लीजिए। पिछले दो दशकों में बांग्लादेश की स्थिति बदल गई है। वर्ष 2024 में बिहार की प्रति व्यक्ति मासिक आय सिर्फ़ 5,570 रुपए थी। सीमांचल के जिलों में उससे भी कम रही होगी। उसी वर्ष बांग्लादेश की प्रति व्यक्ति मासिक आय 19,200 भारतीय रुपए के बराबर थी, यानी बिहार से कोई चार गुना ज़्यादा। दुनिया भर में लोग बदहाली से बचने के लिए खुशहाल इलाक़ों में जाते हैं। आप जरा सोचिए किसी बांग्लादेशी की मत मारी होगी कि वो अपना घर और देश छोड़कर, जोखिम उठाकर अपने यहाँ से बदहाली की स्थिति में जीने के लिए बिहार आए?

अब आइए 'ह्वाट्सऐप यूनिवर्सिटी' पर। आपने सुना होगा कि बिहार के इन चार मुस्लिम बहुल जिलों में आबादी से भी अधिक 'आधार कार्ड' बने हैं, यानी कुछ विदेशी घुसपैठियों ने बनवाये हैं। इसकी सचाई जांचने के लिए आप 'आधार अथॉरिटी' की वेबसाइट देख लीजिए। चार जिलों में नहीं, बिहार के 38 में से 37 जिलों में कुल जारी हुए 'आधार कार्डों' की संख्या अनुमानित आबादी से ज़्यादा है। यहीं नहीं, पूरे देश में अनुमानित आबादी 141 करोड़ है और 'आधार कार्ड' 142 करोड़ और इसका किसी घुसपैठिये या विदेशी से कुछ लेना-देना नहीं है। इसका कारण है कि इन 'आधार कार्डों' में से कोई एक दहाई मृत लोगों के नाम हैं। यानी यह शुद्ध शिगूफा है।

अब सीधे वोटर लिस्ट की बात कर लें। संसद में एक प्रश्न का जवाब देते हुए 10 जुलाई 2019 को सरकार ने बताया था कि पिछले तीन वर्ष में 'चुनाव आयोग' को पूरे देश में वोटर लिस्ट पर सिर्फ तीन विदेशी नागरिक मिले थे – एक गुजरात, एक बंगाल और एक तेलंगाना में। इस वर्ष जनवरी के महीने में बिहार की वोटर लिस्ट का जो परीक्षण पूरा हुआ, उसके बाद 'चुनाव आयोग' ने बिहार के जिलेवार वोटर और जनसंख्या के आंकड़े जारी किए। 'सीमांचल' के चार जिलों की स्थिति बाक़ी बिहार से बिल्कुल भी अलग नहीं थी। छह महीना पहले हुए उस परीक्षण में चुनाव आयोग को बिहार में एक भी विदेशी नागरिक होने का प्रमाण नहीं मिला। एक नाम भी नहीं कटा।

और हाँ, चार हफ़्ते तक बिहार में बांग्लादेशी घुसपैठियों की भरमार का प्रचार होने के बाद 'चुनाव आयोग' ने सुप्रीम कोर्ट में 'विशेष गहन पुनरीक्षण' के बारे में 789 पेज का हलफनामा दायर किया है। आप जानना चाहेंगे, उसमें विदेशी घुसपैठियों के बारे में क्या लिखा गया है? एक शब्द भी नहीं। एक महीने की कवायद पूरी होने के बाद 'चुनाव आयोग' ने 7 करोड़ 89 लाख लोगों के आंकड़े जारी किए हैं – जिनके फॉर्म भरे गए, जो मर गए, जो अन्य राज्य में चले गए, जो डुप्लीकेट हैं, जिनका अता-पता नहीं है। आप जानना चाहेंगे, इनमें विदेशी घुसपैठियों की संख्या कितनी है? शून्य! इसे कहते हैं शिगूफ़ा! (सप्रेस)

कटाक्ष

राजेंद्र नागर 'निरंतर'

लेखक व्यंग्यकार हैं।

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ

'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जग में उथल-पुथल मच जाए' इन पंक्तियों के लेखक पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने शायद यह सोचकर इन पंक्तियों का निर्माण किया होगा कि कवि की शक्तिशाली लेखनी चलेगी तो दुनिया में होने वाली तमाम समस्याओं का अंत हो जाएगा। शांति छा जाएगी। लेकिन कभी ऐसा हुआ नहीं।

सैकड़ों बरसों से कवि,साहित्यकार, चिंतक, विचारक, आलोचक पूरे विश्व की समस्याओं पर चाहे वह परमाणु बम हो या मानवाधिकार, खूब लिख रहे हैं लेकिन उथल-पुथल तो छोड़ो एक छोटा सा झटका भी महसूस नहीं होता। हां साहित्यकार महोदय जरूर अपनी रचना को लोगों को सुना-सुना कर उछलते कूदते रहते हैं। हमारे पड़ोस में रहने वाले,लोकल अखबार में छपकर अपने आप को राष्ट्रीय स्तर का कवि समझने वाले वीर रस के कवि दिग्विजय जी ने चार छंद लिखकर सोचा कि शायद महिलाओं पर होने वाले अत्याचार कम हो जाएंगे। देश की दशा और दिशा बदल जाएगी। लिहाजा जैसा सब घरों में होता है, उनकी सबसे पहली श्रोता बनी उनकी अपनी पत्नी, जिसने रोटी बनाते बनाते 'ठीक है' कहते हुए कविता को पास ऑन कर दिया। दूसरी श्रोता बनी पड़ोसी की पत्नी जिसे अभी-अभी साहित्यकार बनने का कीड़ा काटना शुरू हुआ था। उन्हें तो वाह वाही करनी ही थी। फिर शुरू हुआ स्थानीय अखबार के परिचित संपादक से कविता को छपवा कर उसके प्रचार प्रसार का दौर। ब्रोशर नुमा उस साप्ताहिक के छपते ही वह शाम को गली के चौराहे पर आकर खड़े हो गए कि शायद लोग उन्हें पहचान लेंगे, ट्रैफिक जाम हो जाएगा पर सिवाय तीन कुत्तों के जिन्हें वे रोज बिस्किट देते थे कोई उनके पास नहीं आया। फिर उन्होंने चाय पान की दुकान और रेलवे स्टेशन पर घूमना शुरू किया। कहीं कोई हलचल नहीं। आखिर उन्होंने एक से पूछ ही लिया कि आज उनका महिला अत्याचार पर एक गीत छपा है। पढ़ा क्या ?

किसी ने टाइम नहीं होने की बात कही तो किसी ने उन्हें पागल समझ लिया। अंत में उन्होंने सोशल मीडिया की मदद ली। व्हाट्सएप पर सबको शेयर करने के बाद उन्होंने यह अपील भी की कि इस गीत को दस लोगों तक जरूर पहुंचाएं। प्रधानमंत्री तक बात पहुंचनी चाहिए। उन्हें उम्मीद थी कि अब जरूर पूरा देश हिल जाएगा लेकिन सिवाय उनकी पत्नी,साली और बेटी के अलावा किसी ने लाइक नहीं किया। बल्कि लड़के ने तो दो बातें और सुना दी।

एक कवि हुए तीर्थानंद जी। उन्होंने आध्यात्मिक गीत लिखकर देश में हिंदुत्व की लहर जगाने का प्रयास किया लेकिन बरसों से सोया हिंदू तो छोड़िए सुबह उनके गाने की आवाज सुनकर खुद पड़ोसी भी नहीं उठा।

एक व्यंग्यकार दावा करते हैं कि उनके लिखे व्यंग्य, समाज की विसंगतियों को बदल सकते हैं। बाईस व्यंग्य संग्रह खुद के पैसे से छपवा कर भी उनका भ्रम समाप्त नहीं हुआ है। समाज की विषमताओं के खिलाफ एक संपादक जी हमेशा आधे आधे पेज में खूब लिखते हैं लेकिन ना कभी बलात्कार बंद हुए, ना ट्रैफिक समस्याएं खत्म हुई, ना कभी आधा किलोमीटर में सड़क पर पसरे पंद्रह आवारा जानवर उठे। कुत्तों की समस्या तो वर्षों से मुंह उठाए खड़ी है।

एक महोदय ने तो कई खंड काव्य और संग्रह वृद्धावस्था,बाल शोषण,श्रमिक समस्या और भ्रष्टाचार के खिलाफ रच दिए। पर वाह री किस्मत! आज तक पूरे देश में कहीं कोई परिवर्तन नहीं हुआ। पर उनका लिखना आज भी जारी है। वह लिखते हैं, पूरे देश में प्रचार करवाते है, समीक्षाएं करवाते हैं, अनुवाद करवाते हैं। वे जिंदा हैं तो सिर्फ इसी उम्मीद पर कि 'बैठे हैं नदी किनारे,कभी तो लहर आएगी'।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

(अब श्रद्धा भी पैकेज में उपलब्ध है)

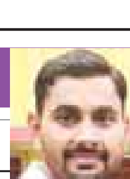

सचिन सिंह परिहार

(लेखक एवं राष्ट्रीय कराते खिलाड़ी)

भगवान लाइव हैं, सब्सक्राइब करें!

सावन का महीना चल रहा है। चारों ओर भक्ति का उत्सव है। भगवान शिव को गंगाजल, बेलपत्र, दूध और अब डाटा पैक चढ़ाया जा रहा है। मैंने सोचा, इस बार सावन में एक सच्चे श्रद्धालु बनते हैं। चप्पल बाहर, मोबाइल भीतर। ऐसी भक्ति करनी है कि भोलेनाथ भी आकाशगंगा से झाँकें और कहें, 'बेटा, तुम तो सच में जुड़े हुए लगते हो।' लेकिन मंदिर पहुँचा, तो अनुभव हुआ कि अब शिवालय केवल ईश्वर का वास नहीं, बल्कि आधुनिक युग का भक्ति केंद्र बन चुका है। एक युवक दिखा। गले में रुद्राक्ष की माला, कानों में छोटे यंत्र, हाथ में कांवड़ और उंगलियों से सीधा प्रसारण चालू।

बम बम भोले बोलते हुए कह रहा था

'मित्रों, हम अभी दर्शन करवा रहे हैं। कृपया इसे सबके साथ साझा करें, और ध्यान रखें कि घंटी वाला चिन्ह दबाना न भूलें।' पास ही एक वृद्ध महिला आँखें मूँदे खड़ी थीं। पर कैमरे के दृश्य में न होने के कारण उनकी श्रद्धा मानो महत्वहीन हो गई थी।

श्रद्धा की दुकान और छूट का आकर्षण

मंदिर के बाहर एक स्टॉल सजा था। ऐसा लग रहा था जैसे किसी बड़े ऑनलाइन बाज़ार की शाखा हो।

'हर हर महादेव विशेष पैकेज केवल नौ सौ निन्यानवे रुपये में।' इसमें मिलेगा पाँच सेकंड में दर्शन, एक सुंदर फ़ोटो फ्रेम, और पंडित जी का ऐसा आशीर्वाद जो किसी तस्वीर के लिए उपयुक्त हो।

एक युवक अपनी कमीज़ पर लिखवा रहा था

'भोले बाबा ने मुझे अनुसरण किया है।'

कहाँ और कैसे? शायद किसी सामाजिक मंच पर।

मंदिर के प्रांगण में कथा चल रही थी।

पंडित जी गंभीर आवाज़ में बोले

'शिव वही हैं, जो भाव स्वीकार करते हैं।'

भीड़ में से कोई बोला

'थोड़ा ज़ोर से बोलिए पंडित जी, आवाज़ ठीक से नहीं आ रही।'

अब कथा नहीं रही, दृश्य सामग्री बन गई है।

जहाँ भावनाएँ उच्च गुणवत्ता के कैमरे में कैद होती हैं, और मोक्ष किसी यंत्र से सम्पादित किया जाता है।

भक्तों की टोली आई। कांवड़, थिरकते शरीर, और ऊँची ध्वनि में बजते गीत।

'बम बम बोले, नाचे मोबाइल वाले।'

डमरू अब प्रतीक बन गया है। असली ध्वनि अब बढ़े हुए कंपन में सुनाई देती है।

एक युवक नाचते हुए बोला

अगर वीडियो नहीं डाला, तो लोग समझेंगे मैं आया ही नहीं!

मंदिर के एक कोने में एक साधु शांति से बैठे थे।

मैंने पूछा

'बाबा, अब कोई आपके पास नहीं आता?'

बोले

'अब लोग मंत्र खोजी यंत्र से ढूंढते हैं, ध्यान देखने वाले मंच से करते हैं। मैंने स्वयं को मौन कर लिया है।

भगवान भी अब बादलों के बीच जा बसे हैं।'

ईश्वर की प्रतीक्षा या सिग्नल की तलाश

गर्भगृह के बाहर एक युवक मोबाइल ऊपर उठाकर खड़ा था।

मैंने पूछा

'क्या हुआ भाई?'

वह बोला

'सिग्नल नहीं आ रहा।'

'भगवान के लिए?'

'नहीं, मेरी दृश्य सामग्री अपलोड नहीं हो रही!'

यह अंत नहीं, एक चेतावनी है

अब सावन साधना का महीना नहीं, संकेत की जाँच का समय बन गया है। श्रद्धा अब किसी पंक्ति के योग्य हो गई है। भक्ति एक आयोजन बन गई है, जिसमें ईश्वर वही बनता है जो कैमरे में सुंदर दिखे।

कहीं ऐसा न हो कि भोलेनाथ स्वयं प्रकट होकर कहें बेटा, मेरे नाम पर वस्त्र छापना, गाने बजाना, दृश्य बनाना सब ठीक है। पर कभी मेरी आँखों में भी झाँक लिया करो। कभी शांति से बैठ जाया करो। कभी बस 'हर हर महादेव' कहकर मौन हो जाया करो।

जब अगली बार मंदिर जाना हो,
मोबाइल ज़रूर ले जाना,
पर मन को भी साथ ले जाना।
क्योंकि भगवान को संकेत की नहीं,
केवल सच्ची निष्ठा की ज़रूरत है।

कराची में राम का आगमन

डॉ. भूपेन्द्र कुमार सुल्लेरे

सामाजिक स्मृति, सांस्कृतिक साझापन

जहाँ गोलियों की गूंज थी, वहाँ रामायण का मंचन हुआ – पाकिस्तान के दिल कराची में, राम की कथा ने फिर से स्मृति और संवाद के द्वार खोले। भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर है। हाल ही में पहलगाम में पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा 26 हिंदुओं की नृशंस हत्या और भारत द्वारा चलाए गए ऑपरेशन 'सिंदूर' की सैन्य प्रतिक्रिया ने दोनों देशों के संबंधों को और विषाक्त बना दिया है। इसी पृष्ठभूमि में, कराची में एक शांत और विलक्षण सांस्कृतिक घटना घटित हुई – वहाँ के 'मौज' थिएटर समूह ने पाकिस्तान आर्ट्स काउंसिल में हिंदू महाकाव्य 'रामायण' का सफल मंचन किया।

यह कोई मामूली घटना नहीं थी। एक ऐसे समय में जब सीमाएँ केवल कंटीले तारों से नहीं, बल्कि डर और नफरत से भी जकड़ी जा रही हैं – कराची में रामायण का मंचन, कलात्मक साहस और सामाजिक स्मृति की एक जीवंत झलक है।

कलाकार मुसलमान, कथा राम की

इस नाट्य प्रस्तुति की एक और विशेष बात यह थी कि इसके सभी कलाकार पाकिस्तानी मुसलमान थे। केवल निर्देशक, योगेश्वर करेरा, एक हिंदू थे, और निर्माता राणा काज़मी, एक उदार और दूरदर्शी पाकिस्तानी मुसलमान। कराची जैसे शहर में, जहाँ सांस्कृतिक विविधता धीरे-धीरे सिकुड़ती जा रही है, वहाँ एक समर्पित मुस्लिम टीम द्वारा रामायण का मंचन किसी साम्प्रदायिक सहयोग नहीं, बल्कि साझा विरासत की पुनरावृत्ति जैसा था।

यह दर्शकों के लिए भी एक प्रयोग था। मंचन के दौरान 'मुंद्रिका' जैसे शब्द पर जब कुछ दर्शक अचकचाए, तो यह स्पष्ट हुआ कि सांस्कृतिक शब्दावली भी बँटती है, मिटती है, और फिर कभी-कभी लौटती भी है।

स्मृति का एक पुराना पन्ना

इस रामायण की गूंज हमें एक और याद दिलाती है – 1987-88 के वह रविवार, जब भारत ही नहीं, पाकिस्तान की गलियाँ भी सूनी हो जाती थीं, क्योंकि रामानंद सागर की रामायण और बी.आर. चोपड़ा की महाभारत वहाँ के टेलीविजन पर भी प्रसारित होती थीं। उस समय किसी ने धर्म नहीं देखा, बस कथा देखी। कथा में अपने को देखा।

क्या यह कोई संयोग है कि आज भी पाकिस्तानी समाज का एक वर्ग इन कथाओं को न केवल पहचानता है, बल्कि मंच पर उन्हें जीवंत भी करता है? शायद नहीं। यह 'सामाजिक स्मृति' का काम है – वह स्मृति जो किसी कौम के डीएनए में होती है, भले ही समय, धर्म और राजनीति उसे ढँकने की कितनी भी कोशिश करें।

सांस्कृतिक विचलन और 'दूसरे' की कल्पना

पाकिस्तान एक समय में भारतीय उपमहाद्वीप की साझा संस्कृति का हिस्सा था। लेकिन 1951 में लियाक़त अली ख़ान की हत्या और 1971 के युद्ध के बाद, एक राष्ट्र-निर्माण की ऐसी प्रक्रिया शुरू हुई, जिसमें भारत को 'दुश्मन' और हिंदू को 'अन्य' घोषित करना आवश्यक हो गया। जनरल ज़िया-उल-हक़ का दौर तो इस अलगाव का संस्थानीकरण था।

इसी प्रक्रिया में हिंदू प्रतीकों, ग्रंथों, स्मृतियों को धीरे-धीरे न केवल अस्वीकार किया गया, बल्कि उनकी जगह इस्लामिक राष्ट्रवाद को स्थायी कथानक के रूप में स्थापित किया गया। किंतु स्मृति मिटती नहीं, केवल छिपती है – और जब उसे कलात्मक स्पर्श मिलता है, तो वह फूट पड़ती है, मंच पर, रचनाओं में, या किसी अली, राणा या सम्हान के अभिनय में। ...नाटक में रावण का किरदार निभाने वाले सम्हान गाज़ी और कैकेयी का किरदार निभाने वाली सना तोहा ने भी इसी तरह के विचार व्यक्त किए हैं। मंच-प्रस्तुति से जुड़े युवा तकनीकी सहायक अली का कहना था – 'मैं मुसलमान हूँ, लेकिन रामायण का यह मंचन मेरे लिए किसी धर्म के विरोध में खड़े होने जैसा नहीं था। मुझे गर्व है कि मैंने एक ऐसे नाटक को मंच पर उतरते देखा, जिसने दर्शकों को जोड़ने, सोचने और संवाद की प्रेरणा दी। कला की कोई सीमा नहीं होती, और शायद यही पाकिस्तान की नई सोच की शुरुआत है।'

राणा काज़मी की आस्था: संवाद का विकल्प नहीं होता

रामायण नाटक की निर्माता राणा काज़मी ने कहा - 'मुझे नहीं लगता कि किसी चीज़ पर प्रतिबंध लगाने से कभी कोई फ़ायदा हुआ है। हम एक-दूसरे के कार्यक्रम देखते हैं, उनसे जुड़ते हैं, आनंद लेते हैं – प्रतिबंध कभी उसे नहीं रोक पाया।'

ये आवाज़ पाकिस्तान की एक नई पीढ़ी की भी हो सकती है – जो अपनी जड़ों से डरती नहीं, बल्कि उन्हें पहचानती है।

भूगोल में बसे आख्यान

रामायण और महाभारत की कई घटनाएँ आज के पाकिस्तान में घटित हुई थीं –

कैकेयी का मूल राज्य केकय, भरत की मातृभूमि; तक्षशिला, जहाँ गुरु उत्तर का विद्यालय था; सिंधु और गांधार, जहाँ से महाभारत की गांधारी आईं – ये स्थान राजनीतिक सीमा पार, लेकिन सांस्कृतिक केंद्र में हैं।

मंचन से ज्यादा, स्मरण था यह

कराची में राम का मंचन केवल एक नाटक नहीं था – वह सांस्कृतिक पुनर्जागरण की एक क्षणभंगुर, लेकिन तीव्र झलक थी। यह न तो भारत की 'विजय' थी और न पाकिस्तान की 'पराजय'। यह आम लोगों की वह साझा स्मृति थी, जो शायद कह रही थी-

'हम बँटे ज़रूर, पर हमारे पूर्वज और उनकी कहानियाँ नहीं बँटीं।'

यह घटना बताती है कि कला और स्मृति, जब साथ आते हैं, तो सीमा नहीं देखते – केवल कथा सुनाते हैं। और कथा में, सब अपने होते हैं – राम भी, रावण भी, और सीता भी।

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

वैचारिक मतभेद तो दिमागी चेतना का सूचक है

शैक्षणिक एवं तकनीकी विकास के दौर में आम नागरिकों की औसत बुद्धि का स्तर दिनोंदिन तर्कसंगत होता जा रहा है। अब वह दौर नहीं रहा कि एक ने कहीं और दूसरे ने मान ली। हालांकि बीते समय में विभिन्न क्षेत्रों की उच्चस्तरीय शख्सियत के बोल वचन भी 'सत्य वचन महाराज' की मुद्रा में अकाट्य माने जाते रहे थे। लेकिन अब किसी भी तथ्य को आसानी से स्थापित नहीं किया जा सकता। आम नागरिकों के जेहन में हर किसी बात पर तमाम तरह के 'किंतु परंतु' स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हो ही जाते हैं। न केवल राजनीति अपितु सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में भी ऐसी स्थिति पायी जाती है कि किसी भी स्थापित शख्सियत की अवधारणा को सर्वमान्य नहीं माना जाता। सबकी सोचने और समझने की अपनी-अपनी क्षमता है और सबके पास अपने-अपने आधार हैं।

ऐसी स्थिति निर्मित हो जाने के कारणों की पड़ताल करने पर अंततः यही सिद्ध होता है कि नागरिकों की शैक्षणिक एवं तकनीकी क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। इसके चलते सदियों पुरानी अवधारणाएं या तो सिरे से ही नकारी जा रही है या फिर उसका पालन किया भी जा रहा है तो तर्क की कसौटी पर पूरी तरह कसकर। यूं भी आज जितने अति विकसित साधन-संसाधन है, कहीं न कहीं उसके उदय में भी धर्म ग्रंथो की ही कोई प्रेरणा रही होगी। खैर, जहां तक दैनिक जनजीवन की बात है, अब आम नागरिकों को कपोलकल्पित बातों की अपेक्षा तार्किक बातों पर ही भरोसा होने लगा है। एक प्रकार से नागरिकों को अपने अच्छे बुरे का इल्म बहुत बेहतर तरीके से होने लगा है। यह एक सुखद स्थिति है और सुनहरे कल की ओर संकेत करती है।

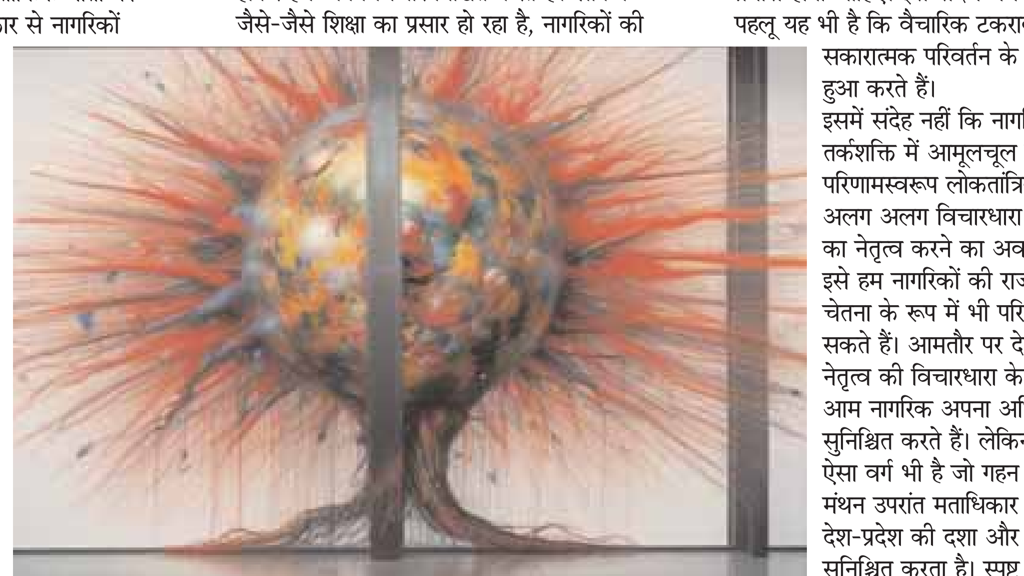

यह एक स्थापित तथ्य है कि राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक संदर्भों में किसी भी अभिमत पर हर एक की अपनी एक विशिष्ट अवधारणा होती है। यह आवश्यक नहीं होता कि इन संदर्भों में हमारे दष्टिकोण से अन्य पक्ष भी शत-प्रतिशत रूप से सहमत हो। प्रत्येक व्यक्ति के अपने-अपने पूर्वाग्रह हो सकते हैं, कभी-कभी पूर्वाग्रह की प्रबलता, दुराग्रह में तब्दील भी हो जाती है -ऐसे में किसी भी विषय को लेकर तटस्थ दृष्टिकोण का प्रतिपादन नहीं हो पाता। इन कारणों के चलते कालांतर में नागरिकों के बीच परस्पर वैचारिक टकराव की स्थिति भी निर्मित हो जाया करती है। किसी भी स्थिति में असहमतियों को कुचलना, आखिरकार नकारात्मक परिणाम का कारक होता है। ऐसी स्थिति में परस्पर संवाद से समाधान की ओर बढ़ना चाहिए।

कभी-कभी व्यक्ति विशेष के विचारों से अभिप्रेरित होकर हम अपने विचार निश्चित करते हैं। लेकिन जैसे-जैसे शिक्षा का प्रसार हो रहा है, नागरिकों की तर्कशक्ति में आशातीत परिपक्वता भी परिलक्षित होती है। ऐसी स्थिति को सुखद कहा जा सकता है। क्योंकि किसी भी विषय पर गहन वैचारिक मंथन उपरांत प्राप्त किए गए निष्कर्ष समाज की दशा और दिशा को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। लेकिन जब ऐसे निष्कर्ष किसी अन्य पर थोपने के किसी भी स्तर पर प्रयास किए जाते हैं, तब वैचारिक टकराव परस्पर कटुता का कारण बन जाता है। दरअसल इस स्थिति से बचने के प्रयास होना चाहिए। इस संदर्भ में सिक्के का दूसरा पहलू यह भी है कि वैचारिक टकराव भी सकारात्मक परिवर्तन के कारक सिद्ध हुआ करते हैं।

इसमें संदेह नहीं कि नागरिकों की तर्कशक्ति में आमूलचूल परिवर्तन के परिणामस्वरूप लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अलग अलग विचारधारा को देश-प्रदेश का नेतृत्व करने का अवसर मिला है। इसे हम नागरिकों की राजनीतिक चेतना के रूप में भी परिभाषित कर सकते हैं। आमतौर पर देश प्रदेश के नेतृत्व की विचारधारा के आधार पर आम नागरिक अपना अभिमत सुनिश्चित करते हैं। लेकिन नागरिकों का ऐसा वर्ग भी है जो गहन वैचारिक मंथन उपरांत मताधिकार के माध्यम से देश-प्रदेश की दशा और दिशा को सुनिश्चित करता है। स्पष्ट रूप से एसी जागृति लोकतंत्र की बुनियाद को और भी अधिक सशक्त आधार देने में प्रबल रूप से सहायक सिद्ध हो रही है। इन सब के मूल में मतभिन्नता के चलते ही अंततः परिवर्तन को स्वीकार किया गया है।

सामाजिक दृष्टि से अनावश्यक रूप से परिपारित की जा रही परंपराओं पर काफी हद तक अंकुश लगा है। दरअसल विचारधारा के टकराव से भी नए निष्कर्षों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त होती है। यही कारण है कि हमने प्रत्येक रीति रिवाज और परंपराओं को तार्किक दृष्टि से आकलित करने की दृष्टि प्राप्त की है। भौतिक संसाधनों की बहुलता के बावजूद आम नागरिकों का विचार-दर्शन आस्था एवं विश्वास पर ही टिका हुआ है। यह जरूर है कि प्रगति की दौड़ में हर कोई सहभागी है, यही नहीं अपितु भौतिकवाद की प्रबलता नैतिकता को भी तार-तार कर रही है। बावजूद इसके हमारी विश्व वंदनीय भारतीय संस्कृति से आच्छादित हमारी तार्किक परंपराओं का परिपालन भी बखूबी किया जा रहा है।

परिवर्तन के दौर में दुनिया में चाहे जितने परिवर्तन आए, लेकिन हम अपनी मूलभूत सभ्यता और संस्कृति से निरंतर जुड़े रहे हैं। आज भी धर्म-अध्यात्म की दुनिया में दुनिया भर की चहल-पहल स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। आज भी व्रत, नियम और संयम का परिपालन किसी न किसी रूप में परिजन कर रहे हैं। माता-पिता के संस्कार बच्चों में परिलक्षित हो रहे हैं। माना कि नकारात्मकता भी है, लेकिन आज भी मर्यादित जीवन शैली को बड़ी शिद्दत के साथ आत्मसात किया जा रहा है। दरअसल राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में जितने भी परिवर्तन हुए हैं उनके मूल में कहीं न कहीं वैचारिक असहमतियां किसी न किसी रूप में अवश्य रही है। कुल मिलाकर मुद्दे की बात यह कि वैचारिक मतभिन्नता का सदैव स्वागत किया जाना चाहिए।

रीना रामटेके : सामाजिक बहिष्कार बीच बनाई अपनी पहचान

अंकुरण

सत्येन्द्र पाण्डेय

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

रीना रामटेके का जन्म छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले में हुआ। उनका परिवार अनुसूचित जाति से सम्बन्ध रखता है। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत चुनौतीपूर्ण थी। उनके अभिभावक मजदूरी करते थे और परिवार का गुजारा आसानी से नहीं चल पा रहा था। एक साथ ही सामाजिक और आर्थिक वंचनाओं के शिकार इस परिवार में जब बेटी का जन्म हुआ तो उसका बहुत उत्साहपूर्वक स्वागत तो नहीं ही किया जा सका। ट्राई जाहिर है, समाज में वर्चस्व रखने वाली पितृसत्तात्मक विचारधारा का असर रहा होगा जिसमे बेटे के जन्म का उत्सव मनाया जाता है और बेटियों के पैदा होने पर परिवार में वैसी खुशी नहीं होती है। जैसे-जैसे उमर बढ़ने लगी जेंडर पर आधारित यह घरेलू असमानता स्पष्ट आकार लेने लगी और घर के कामों में बेटे के मुकाबले बेटी का समय अधिक जाया होने लगा जिसका परिणाम उनकी पढ़ाई-लिखाई पर नकारात्मक रूप से पड़ा। अपने ही घर में होने वाली लैंगिक हिंसा और भेदभाव की पीड़ा को सिर्फ उसे भोगने वाले ही महसूस करते हैं। वे समझ रही थी कि यह गलत है लेकिन कोई रास्ता दिखाई नहीं देता था और घरवालों से इस पर कोई स्पष्ट बात करने में भी दिक्कत तो थी ही।

दलित समुदाय से ताल्लुक रखने वाली रीना रामटेके के परिवार को न केवल जातिगत असमानता और भेदभाव का शिकार होना पड़ा बल्कि एक समय अपने ही समुदाय द्वारा सामाजिक बहिष्कार का भी सामना करना पड़ा। वंचित समुदाय के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने के कारण जब दबंगों के हितों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा तो उन्हें जान से मारने की धमकियाँ भी दी गई लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और लोगों को साथ में लेकर लोकतान्त्रिक प्रक्रियाओं का इस्तेमाल किया और अपने गृह नगर से पार्षद चुनी गई। एक समय बाद जब इसकी सीमायें समझ में आई तो सामाजिक संस्था का निर्माण किया और जल, जंगल और जमीन पर आदिवासियों की हकदारी के लिए प्रयास करना शुरू किया और एक बड़े इलाके में वन भूमि के निवासियों को पर्यावास अधिकार उपलब्ध कराने में भी सफल रहीं। रीना रामटेके का जन्म छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले में हुआ. उनका परिवार अनुसूचित जाति से सम्बन्ध रखता है। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत चुनौतीपूर्ण थी। उनके अभिभावक मजदूरी करते थे और परिवार का गुजारा आसानी से नहीं चल पा रहा था। एक साथ ही सामाजिक और आर्थिक वंचनाओं के शिकार इस परिवार में जब बेटी का जन्म हुआ तो उसका बहुत उत्साहपूर्वक स्वागत तो नहीं ही किया जा सका। ट्राई जाहिर है, समाज में वर्चस्व रखने वाली पितृसत्तात्मक विचारधारा का असर रहा होगा जिसमे बेटे के जन्म का उत्सव मनाया जाता है और बेटियों के पैदा होने पर परिवार में वैसी खुशी नहीं होती है। जैसे-जैसे उमर बढ़ने लगी जेंडर पर आधारित यह घरेलू असमानता स्पष्ट आकार लेने लगी और घर के कामों में बेटे के मुकाबले बेटी का समय अधिक जाया होने लगा जिसका परिणाम उनकी पढ़ाई-लिखाई पर नकारात्मक रूप से पड़ा। अपने ही घर में होने वाली लैंगिक हिंसा और भेदभाव की पीड़ा को सिर्फ उसे भोगने वाले ही महसूस करते हैं। वे समझ रही थी कि यह गलत है लेकिन कोई रास्ता दिखाई नहीं देता था और घरवालों से इस पर कोई स्पष्ट बात करने में भी दिक्कत तो थी ही।

इस बीच एक और घटना हो गई। उनके पिता के बड़े पिता जी के कोई संतान नहीं थी। उनकी संपत्ति पर कुछ लोगों ने कब्ज़े का प्रयास किया तो रीना जी के परिवार ने स्वाभाविक रूप से विरोध किया। कब्ज़ा करने वालों का दखल जाति की सामाजिक पंचायत में मजबूत था इसलिए सामाजिक पंचायत ने इनके परिवार का बहिष्कार कर दिया। रातों-रात यह फरमान जारी कर दिया गया कि समुदाय का कोई सदस्य न तो रीना के परिवार के साथ कोई सम्बन्ध रखेगा न ही इनके साथ उठेगा-बैठेगा। इनके परिवार के साथ सामान और रुपयों-पैसों के लेन-देन पर पाबन्दी लगा दी गई थी। बहिष्कार की हद यह थी कि कोई बच्चा रीना और उनके परिवार के बच्चों के साथ खेलता भी नहीं था। जाहिर है यह सब मानसिक रूप से बहुत पीड़ादायक रहा होगा।

भेदभाव के इस दोहरी मुश्किल से बाहर निकलने का एक ही रास्ता उन्हें समझ में आता था कि घर की चारदीवारी से बाहर निकला जाये तभी इस घुटन से मुक्ति मिलेगी।

उन्हें बाहर निकालने का जो दरवाजा मिला वह था सिलाई सेंटर का। उनके पडौस की एक लड़की सिलाई सीखने जाती थी। वे भी उसके साथ जाने लगीं। इस तरह से दोनों एक दूसरे की निगरानी में थी। घरवालों को भी संतोष था। लड़की सिलाई सीख जाएगी तो उसके शादी व्याह में यह बात फायदा करेगी। यह परिवार के सपनों की सीमा थी लेकिन रीना जी के सपनों की कोई सीमा नहीं थी। वे अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए कुछ अलग करना चाहती थी। कुछ हटकर जो उनके जीवन को नई उंचाई प्रदान करे लेकिन सिलाई की ट्रेनिंग से उन्हें ऐसा कुछ चुनौतिपूर्ण लक्ष्य दिखाई नहीं देता था। इस बीच उनकी एक रिश्तेदार ने उन्हें बताया कि उनकी कोई परिचित एक सामाजिक संस्था में काम करती है। यह संस्था समाज में बेहतरी के लिए काम करती है। यह बात रीना जी के लिए आकर्षक लगी और चुनौतीपूर्ण भी। घरवालों के विरोध के बावजूद वे पहुँच गई जागृति सेवा संस्थान में साक्षात्कार देने। संयोग से उनका चयन भी हो गया और एक नई दुनिया का रास्ता उनके लिए खुल गया।

यह समय था छत्तीसगढ़ के नए राज्य के रूप में गठन का। एक नया अवसर रीना जी के जीवन में भी इसी समय प्रवेश कर रहा था। उन्हें सबसे पहले मौका मिला रायपुर जिले के ही एक ब्लॉक में काम करने का। वे पंचायती राज संस्थाओं के सशक्तिकरण और ग्राम सभाओ की बैठकों तथा निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए काम करती थी। यहीं उनका परिचय पेसा कानून और वन अधिकार अधिनियम से भी हुआ और वे उनके प्रभावी क्रियान्वयन में मदद करती थी। रास्ता नया जरुर था लेकिन समाज की मान्यताएं वही पुरानी थी और उन्हें कदम-कदम पर जातिगत भेदभाव का सामना करना पड़ता था लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और आगे बढती गईं।

2008 में वे मंथन संस्था से जुड़ गई और धमतरी जिले के सीता नदी अभ्यारण्य क्षेत्र में आदिवासी समुदाय के बीच महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए काम करती थीं। इसके बाद कुछ समय तक उन्होंने गरियाबंद जिले में महिलाओं की आजीविका के संवर्धन हेतु काम की शुरुआत की जहाँ मुख्य लक्ष्य था स्थानीय आजीविका और वनोत्पाद संग्रहण से महिलाओं को जोड़ते हुए समाज और परिवार में उनके सामान और निर्णयात्मक क्षमता को बढ़ाना। इन सभी कामों में उनको अपेक्षित सफलता तो हासिल हो रही थी लेकिन अनेक मामलों में निर्णय का अधिकार प्राप्त नहीं था इसलिए मित्रों के सुझाव पर अपनी संस्था बनाने का विचार आया इसी दौरान उन्हें दलित फाउंडेशन की एक फ़ेलोशिप प्राप्त हुई जिसके तहत 30 गाँवों में रोजगार गारंटी कानून के प्रभावी क्रियान्वयन पर काम करना था। उन्होंने ग्रामसभाओं को सशक्त करते हुए ग्राम स्तरीय माइक्रो प्लान तैयार किये और जॉब कार्ड धारियों को मांग आधारित 100 दिन के रोजगार को उपलब्ध कराया। उन्होंने वन अधिकार कानून के तहत व्यक्तिगत और सामुदायिक वन अधिकार उपलब्ध कराने के लिए भी सक्रियता से काम किया। इस काम के दौरान अनेक स्तरों पर अनेक लोगों के हित और स्वार्थ प्रभावित हो रहे थे जिसके कारण उन्हें धमकियाँ मिलने लगी ताकि वे काम बंद करके घर बैठ जाएँ परन्तु इससे रीना जी का हौसला कमजोर नहीं हुआ बल्कि जिद बढती चली गई. उनके उल्लेखनीय कामों के चलते 2013 में उन्हें नेशनल फाउंडेशन फॉर इण्डिया के प्रतिष्ठित सी. सुब्रमण्यम अवार्ड से सम्मनित किया गया था।

2015 में उन्होंने गरियाबंद नगर पंचायत के पार्षद का चुनाव निर्दलीयजीता और अपना शानदार योगदान किया। अब संस्था बनाने का समय आ गया था और उन्होंने अपने मित्रों के साथ मिलकर नव निर्माण चेतना मंच का गठन कर लिया। वे अंकुरण कार्यक्रम में शामिल हुई और संवैधानिक मूल्यों के प्रसार, युवा नेतृत्व विकास तथा वन अधिकार के मुद्दों पर सघनता से काम किया। यह उनके काम का ही परिणाम है कि वन अधिकार कानून 2006 के तहत पूरे देश में तीसरा और छत्तीसगढ़ में बैगा जनजाति को दूसरा पर्यावास अधिकार पत्र गौरेला में प्राप्त हुआ है। इसके साथ ही 17 ग्राम सभा को सामुदायिक वन संसाधन अधिकार पत्र हासिल हुए हैं।

धार जिले की डिसेंट क्रिकेट एकेडमी के खिलाड़ियों ने एक बार फिर अपना परचम लहराया

एकेडमी की देवेशी यादव, तमन्ना चौधरी अंडर-19 मध्य प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के कैम्प में, अनवी यादव अंडर-15 में चयनित

धार। धार जिले की प्रसिद्ध डिसेंट क्रिकेट एकेडमी के खिलाड़ियों ने एक बार फिर अपना परचम लहराया है। अकादमी के तीन खिलाड़ियों - देवेशी यादव और तमन्ना चौधरी का अंडर-19 मध्य प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के कैम्प में चयन हुआ है, जबकि अनवी यादव का अंडर-15 में चयन हुआ है।

तीनों ही खिलाड़ी डिसेंट क्रिकेट एकेडमी में प्रेक्टिस करते है और उनकी इस उपलब्धि से अकादमी में हर्ष और उल्लास का माहौल है। एकेडमी के खिलाड़ी पहले से ही विभिन्न मंचों पर अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे, और इस बार लड़कियों ने भी अपनी प्रतिभा का परचम लहराते हुए अकादमी का नाम रोशन किया है।

अकादमी के अध्यक्ष सचिन बाफना, उपाध्यक्ष कपिल यादव, सचिव अरुण यादव, संरक्षक अंबालाल पाटीदार, सह-सचिव यूनुस शेख, कोच आशीष वसुनिया, चंद्रपाल सिसोदिया और राहुल खराड़ी के साथ-साथ सदस्य केतन कुचेकर, अजय योगी, कृष्णा शिंदे, नीलेश चौधरी और प्रतीक निगम ने खिलाड़ियों को बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान से दिल्ली में की मुलाकात

धार में कृषि महाविद्यालय की स्थापना सहित विभिन्न कृषि संबंधी विषयों पर चर्चा की

धार। गुरुवार को नई दिल्ली स्थित कृषि भवन में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान से केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री,धार -महू लोकसभा क्षेत्र सांसद सावित्री ठाकुर ने कृषि क्षेत्र की विभिन्न योजनाओं व जनहित के मुद्दों पर सार्थक चर्चा की। इस दौरान धार में कृषि महाविद्यालय की स्थापना सहित विभिन्न कृषि संबंधी विषयों पर चर्चा की और केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान को धार लोकसभा क्षेत्र में पधारने का आमंत्रण भी दिया। जानकारी संजय शर्मा ने दी।

भाजपा प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा ने पूर्व विधायक खेमराज पाटीदार के निधन पर उनके निवास पहुंचकर श्रद्धांजलि दी

धार। भारतीय जनता पार्टी धार के पूर्व जिला अध्यक्ष एवं बदनावर पूर्व विधायक पूर्व जिला सहकारी बैंक अध्यक्ष किसान नेता खेमराज पाटीदार का 20 जुलाई को बदनावर विधानसभा के ग्राम

गाजनोद में असमय निधन हो गया था। 1 अगस्त को भाजपा प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा उनके निवास ग्राम गाजनोद पहुंचकर स्व पाटीदार जी को श्रद्धा सुमन अर्पित कर शोक संवेदना व्यक्त की।

इस दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती, पूर्व मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव, इंदौर ग्रामीण जिला अध्यक्ष श्रवण सिंह चावड़ा, ईश्वर कटारा, मंडल अध्यक्ष संतोष पाटीदार समेत उपस्थित भाजपा कार्यकर्ताओं ने श्रद्धांजलि दी।

दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस पर ग्राम पंचायत तिरला महिला सरपंच आरती पटेल विशेष अतिथि के रूप में नामांकित

धार। नई दिल्ली में आयोजित होने वाले स्वतंत्रता दिवस समारोह 2025 के लिए विशेष अतिथि के रूप में ग्राम पंचायत तिरला की महिला सरपंच आरती पटेल को विशेष अतिथि के रूप में शामिल होने हेतु नामांकित किया गया है जिन्होने मध्यप्रदेश की श्रेष्ठ प्रदर्शन करने

वाले सरपंच के रूप में चयन किया गया है। इस सौभाग्यशाली क्षण के पूर्व गुरुवार को भाजपा जिला कार्यालय में जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती ने महिला सरपंच आरती पटेल का देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लाल किले पर स्वतंत्रता दिवस समारोह में विशेष अतिथि के रूप में शामिल होने पर स्वागत कर बधाई दी। इस दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा , मनीष प्रधान , दीपक शर्मा ,अंकित भावसार , कपिल निनामा, हुकुम लस्करी उपस्थित थे।

किसान नहीं कराते मिट्टी का परीक्षण रासायनिक खाद मिट्टी से छीन रहे पोषक तत्व

बैतूल की मिट्टी में जिंक, सल्फर और नाइट्रोजन की भारी कमी, 70 प्रतिशत सैंपल फेल

बैतूल। जिले की कृषि योग्य भूमि की मिट्टी में पोषक तत्वों की लगातार कमी होती जा रही है। यहां मिट्टी परीक्षण में जिंक-सल्फर और नाईट्रोजन की भारी कमी सामने आई है, जो कि चिंता का कारण बनी हुई है। अगर जमीन के पोषक तत्वों को ध्यान में रखते हुए खेती नहीं हुई तो आने वाले दिनों में इसका विपरीत प्रभाव देखने को मिलेगा। मिट्टी परीक्षण केन्द्र से मिली जानकारी के मुताबिक मिट्टी के 100 सैंपलों में से 70 प्रतिशत सैंपलों में जिंक-सल्फर और नाईट्रोजन की कमी पाई गई है। हालांकि कृषि विभाग हर वर्ष समस्या के समाधान के लिए लगातार किसानों को खेतों पर खरपतवार नहीं जलाने, रासायनिक खाद के बजाय जैविक खाद का प्रयोग करने व बुवाई से पहले मृदा परीक्षण कराने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है, लेकिन अभी वांछित सफलता नहीं मिली है। बता दे कि मिट्टी में कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, कैल्सियम, मैग्नीशियम, सल्फर, जिंक, आयरन, कॉपर, बोरान, मैग्नीज, मोलिबडनम, क्लोरीन व जिंक सल्फर सहित कुल 16 पोषक तत्व होते है, जो सभी प्रकार के पौधे और फसलों के जीवनचक्र के लिए जरुरी है। इसमें यदि किसी भी पोषक तत्व की कमी रह जाती है, तो फसल की पैदावार कम होती है। जिंक की कमी से पौधे की नीचे की पत्तियां पीली पड़ जाती हैं, लाल धब्बे भी हो जाते हैं, जिसके कारण पौधा सूर्य की किरणों से अपना पर्याप्त भोजन प्राप्त नहीं कर पाता

है और उत्पादन पर असर पड़ता है।

बिना मिट्टी परीक्षण के खाद का उपयोग- कृषि के क्षेत्र में अधिकतर किसान बिना मिट्टी परीक्षण के बोनी करते हैं। ऐसे में फसल उत्पादन पर भी इसका असर पड़ने लगा है। किसान मिट्टी परीक्षण किए बिना अंदाज से रासायनिक उर्वकों का सबसे ज्यादा उपयोग करते हैं। जबकि किसी भी पोषक तत्व की अधिकता फसलों के लिहाज से ठीक नहीं है। जिले की मिट्टी में पोटाश की अधिकता पाई गई है, जो चिंता का कारण बनते जा रही है। रासायनिक उर्वरकों का बिना विशेषज्ञ और जांच के अंधाधुंध प्रयोग किया जा रहा है। साल-दर-साल धरती में घटते पोषक तत्वों से फसल उत्पादन पर भी इसका सीधा असर देखने को मिल रहा है। पोषक तत्वों का संतुलन बिगड़ने से फसलों पर भी विपरीत प्रभाव देखने को मिलता है। किसानों को इस ओर ध्यान देने की जरूरत है। अधिक उत्पादन के पीछे दौड़ते हुए किसानों को रासायनिक उर्वरकों का उपयोग संतुलित मात्रा में करना चाहिए।

4 महीने में 2200 सैंपलों की जांच - प्राप्त जानकारी के मुताबिक बैतूल बाजार मिट्टी परीक्षण केन्द्र पर अप्रैल से लेकर अब तक इस चार माह के भीतर में 2200 सैंपलों की जांच हुई है। इन सैंपलों की जांच में पोटाश की अधिकता पाई गई है। कृषि वैज्ञानिकों का कहना है, मिट्टी में किसी भी पोषक तत्व की अधिकता अच्छी नहीं है। किसान मिट्टी परीक्षण के बाद ही आवश्यकतानुसार खेतों में उर्वरकों का उपयोग करें। लेकिन कृषि वैज्ञानिकों की माने तो किसान फसल उत्पादन बेहतर प्राप्त करने के लिए बड़े स्तर पर रासायनिक खादों का प्रयोग ज्यादा करते है, लेकिन जिंक, सल्फर नहीं डाल रहा है। क्योंकि ज्यादातर खादों में जिंक की मात्रा कम होती है या नहीं होती है। जिसके लिए किसानों को अलग से इसका प्रयोग करना होता है, जो नहीं हो रहा है।

ढाई लाख किसान, कम ही कराते है मिट्टी परीक्षण - वैसे तो जिले में करीबन 3 लाख हेक्टेयर भूमि में खेती होती है। जिसमें करीब ढाई लाख किसान खरीफ, रबी सहित अन्य फसल के अलावा सब्जियों का उत्पादन लेते है। लेकिन ढाई लाख किसानों में से कम ही ऐसे किसान है जो मिट्टी का परीक्षण कराते है। बैतूल बाजार के सहायक भू सर्वेक्षण अधिकारी चंद्रशेखर चौधरी ने बताया कि क्षमता के अनुरूप हर साल करीब दस हजार मिट्टी के नमूनों की जांच की जाती है। जिसमें बैतूल जिले के विभिन्न क्षेत्रों में जिंक, सल्फर की कमी सामने आई है। जिसके पीछे कारण यह है कि किसान सिर्फ डीएपी और यूरिया ही खेतों में डालते है। जिससे मिट्टी में सिर्फ नाइट्रोजन और फास्फेट की ही कमी पूरी हो पाती है। शेष पोषक तत्व के लिए किसानों द्वारा कोई प्रयास नहीं किया जाता है। जिससे मिट्टी की उर्वरक शक्ति कम होते जा रही है। परिणाम फसलों के कम उत्पादन के रूप में सामने आ रहा है।

इनका कहना है -

4 महीने के भीतर लगभग 2200 मिट्टी सैंपलों की जांच हुई, जिसमें जिंक-सल्फर और नाईट्रोजन पोषक तत्वों कमी पाई है। 70 प्रतिशत सैंपलों में पोटाश की मात्रा अधिक पाई है।

- चन्द्रशेखर चौधरी, सहायक भू सर्वेक्षण अधिकारी, बैतूल

तीन डीएफओ के तबादले, टीआर विजयानंतम धार, वरुण यादव का सागर

- उत्पादन के डीएफओ सचिन का पांढुरना तबादला
- पश्चिम वनमंडल की कमान संभालेंगे लक्ष्मीकांत वासनिक

बैतूल। लंबे इंतजार के बाद वनवृत बैतूल के तीन डीएफओ के तबादला आदेश आखिर राज्य शासन ने जारी कर दिए हैं। वन व्रत में दक्षिण, पश्चिम और उत्पादन के वनमंडल अधिकारीयों के तबादले अन्य जिलों में किये गए हैं। गौरतलब है कि तीन वन अधिकारियों के तबादले तो कर दिए गए, लेकिन इनकी जगह एकमात्र आईएफएस की ही पदस्थापना बैतूल जिले के वनवृत में की गई है जो कि छिंदवाड़ा से स्थानांतरित होकर अब पश्चिम वनमंडल की कमान संभालेंगे। बताया रहा है कि दक्षिण वनमण्डल और उत्पादन वृत में जब तक किसी आईएफएस की पदस्थापना नहीं हो जाती, तब तक किसी अन्य अधिकारी को प्रभार सौंपा जा सकता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार 31 जुलाई 2025 को जारी आदेश के मुताबिक पश्चिम वनमंडल में पदस्थ आईएफएस वरुण यादव को दक्षिण वन मण्डल सामान्य सागर जिले में स्थानांतरित किया गया है। इसी तरह दक्षिण वन मंडल की कमान संभाल रहे आईएफएस टीआर विजयानंतम को सामान्य वनमण्डल धार जिले की कमान सौंपी गई है। यह दोनों ही वर्ष 2018 बैच के अधिकारी हैं। व्रत के अंतर्गत उत्पादन में पदस्थ वर्ष 2020 बैच के अधिकारी सचिन एच नदगड़ी को सामान्य वनमण्डल पांढुर्णा जिला भेजा गया है। तीन आईएफएस के तबादले जिले के बाहर होने के बाद वृत में एकमात्र आईएफएस की ही आमद हो पाई है। वर्ष 2017 बैच के आईएफएस लक्ष्मीकांत वासनिक को सामान्य वन मण्डल छिंदवाड़ा से स्थानांतरित कर वन वृत बैतूल के पश्चिम वन मण्डल में पदस्थ किया गया है। आपको बता दें, कि आईएफएस वरुण यादव एवं विजयानंतम टीआर, इन दोनों ही अधिकारियों की तीन वर्ष की पदस्थापना अवधि वन वृत बैतूल में पूर्ण हो चुकी थी।

आर.डी.पब्लिक स्कूल के शिक्षक ने राष्ट्रीय स्तर पर लहराया परचम

पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप में जीते स्वर्ण, रजत, कांस्य पदक

बैतूल। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान आर.डी. पब्लिक स्कूल बैतूल में स्कूल की डायरेक्टर श्रीमती ऋतु खण्डेलवाल के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ ही समग्र विकास के लिए खेलकूद सहित विभिन्न गतिविधियां संचालित की जा रहीं है। परिणामस्वरूप आर.डी.पब्लिक स्कूल के छात्र देश के ख्यातिनाम तकनीकि, मेडिकल सहित अन्य उच्च शैक्षणिक संस्थाओं में प्रवेशित होने के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी उत्कृष्ट सफलता हासिल कर रहे है। शिक्षा और खेल के क्षेत्र में आर.डी.पब्लिक स्कूल की उत्कृष्टता के चलते यहां के शिक्षक भी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर स्कूल और जिले का नाम रौशन कर रहे है। राजस्थान के झालावाडा में आयोजित राष्ट्रीय पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप में आर.डी. पब्लिक स्कूल बैतूल के विज्ञान शिक्षक और वेटलिफ्टर कौशिक मेहरा ने स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक जीतकर सफलता का परचम लहराया। पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप में राष्ट्रीय स्तर पर ऐतिहासिक सफलता हासिल करने वाले वेटलिफ्टर कौशिक मेहरा आर.डी.पब्लिक स्कूल बैतूल में विज्ञान के शिक्षक है। इस उत्कृष्ट सफलता के लिए श्री मेहरा को आर.डी.पब्लिक स्कूल की डायरेक्टर श्रीमती ऋतु खण्डेलवाल सहित शिक्षकों और विद्यार्थियों ने शुभकामनाएं दी है।

आर.डी.पब्लिक स्कूल के विज्ञान शिक्षक कौशिक मेहरा द्वारा राष्ट्रीय पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप में स्वर्ण, रजत और कांस्य पद हासिल करने पर स्कूल की डायरेक्टर श्रीमती ऋतु खण्डेलवाल ने इस उत्कृष्ट सफलता के लिए उन्हें बधाई देकर कहा कि हमारे लिए यह गर्व का विषय है और विज्ञान शिक्षक कौशिक की उपलब्धि प्रेरणा का स्त्रोत है। डायरेक्टर श्रीमती खण्डेलवाल ने कहा कि विज्ञान जैसे गहन विषय को सहजता और सरलता से पढ़ाने वाले शिक्षक कौशिक मेहरा ने शक्ति के खेल पावर लिफ्टिंग में उत्कृष्ट सफलता हासिल कर हमारे संस्थान के हर बच्चा और हर शिक्षक विशेष है के कॉन्सेप्ट को स्थापित किया है।

विश्व स्तनपान सप्ताह का किया शुभारंभ

बैतूल। जिला चिकित्सालय बैतूल के नवीन एमसीएच भवन में गुरुवार को स्तनपान सप्ताह का शुभारंभ मुख्य अतिथि ग्राम पंचायत गौला सरपंच गजानंद गावंडे एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार हुरमाड़े द्वारा किया गया। इस अवसर पर सरपंच गजानंद गावंडे ने कहा कि विश्व स्तनपान दिवस एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यक्रम हैं। उन्होंने प्रसूता माताओं को समझाइश दी कि वे शिशु को स्तनपान अवश्य करावें, स्तनपान से बच्चे शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं बलवान होंगे। साथ ही उन्होंने माताओं को पौष्टिक आहार सेवन करने की सलाह दी, ताकि माँ और बच्चे स्वस्थ रह सकें। सीएमएचओ डॉ मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि प्रति वर्ष 1 से 7 अगस्त तक स्तनपान सप्ताह के रूप में मनाया जाता है, इस वर्ष की थीम स्तनपान में निवेश, भविष्य में निवेश है, इसका मुख्य उद्देश्य माताओं और शिशुओं के स्वास्थ्य में सुधार करना है, विशेष रूप से स्तनपान को सक्रिय रूप से बढ़ावा देकर शिशु मृत्यु दर को घटाना है। माँ का दूध शिशु का प्रथम टीका होता है। मां का कर्तव्य है कि जितनी जल्दी हो सके शिशु को एक घण्टे के अंदर स्तनपान कराए, यह अमृत तुल्य है, यह कई बीमारियों से सुरक्षा करता है, बच्चों को शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रखता है, रोगों से लड़ने की क्षमता प्रदान करता है, माँ के दूध में इतनी शक्ति होती है कि दुनिया में कोई टानिक ऐसा नहीं बना जो माँ के दूध से अच्छा हो। छः माह तक शिशु को स्तनपान ही करवायें इसके अलावा कोई भी ऊपरी आहार न देवें, माताऐं बच्चों को दो वर्ष तक स्तनपान करवा सकती हैं। उन्होंने उपस्थित नर्सिंग ऑफिसर को प्रसूता माताओं को स्तनपान कराने की लगातार काउसलिंग करने हेतु एवं आशा कार्यकर्ताओं को प्रसव पूर्व एवं प्रसव पश्चात लगातार माताओं को समझाइश देने हेतु कहा। डॉ हुरमाडे ने उपस्थित प्रसूताओं को दो बच्चों में अंतर रखने एवं दो बच्चों के बाद परिवार नियोजन कार्यक्रम अपनाकर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृण करने हेतु समझाइश दी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी एवं सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक द्वारा जन्म के तुरंत बाद स्तनपान कराने हेतु प्रसूता माताओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान किये, साथ ही पीएनसी वार्ड में भर्ती प्रसूताओं को भी महिला चिकित्सक एवं नर्सिंग ऑफिसर द्वारा प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

किसान सम्मान निधि वितरण जिला स्तरीय कार्यक्रम आज

बैतूल। प्रधानमंत्री आज 2 अगस्त को बनारस से किसान सम्मान निधि की 20वी किस्त प्रदान करेंगे। इस सबंध में जिला स्तरीय कार्यक्रम दीप्ती मेरिज लॉन बैतूल बाजार में केन्द्रीय मंत्री दुर्गादास उइके जनजातिय कार्य मंत्रालय भारत सरकार की अध्यक्षता में प्रातः 10:00 बजे से आयोजित है। कार्यक्रम के दौरान कृषि वैज्ञानिको के साथ कृषको की परिचर्चा भी आयोजित की जावेगी। किसान सम्मान निधि की इस किस्त वितरण से जिले के 265734 कृषको को 53.14 करोड़ रूपये की राशि प्राप्त होगी। कृषि विभाग ने सभी कृषको से कार्यक्रम में सहभागीता करने का आग्रह किया गया है।

ग्रामवासियों ने किया सेवानिवृत्त शिक्षिका का विदाई समारोह

बैतूल। शिक्षक का गरिमापूर्ण कार्य, समाज पर जिसका उपकार है। शिक्षक जग में ज्ञान का सदा संचार करता है। शिक्षक बच्चों का दर्पण होता है। ग्राम कुम्हारटेक के ग्राम वासियों ने सेवानिवृत्ति पर प्राथमिक शिक्षिका श्रीमती जगवंता मर्सकोले को भावभीनी बिदाई दी गई। श्रीमती जगवंता मर्सकोले शिक्षिका ने प्राथमिक शाला कुम्हारटेक में प्रथम नियुक्ति से एक ही स्थान पर रह कर 27 वर्ष तक ग्राम कुम्हारटेक में शैक्षणिक कार्य किया। ग्रामवासी कुम्हारटेक उनके शैक्षणिक कार्य और छात्र हित में किए गए अभूतपूर्व सराहनीय कार्य से अभिभूत थे। जैसे ही ग्रामवासियों को पता चला की शिक्षिका श्रीमती जगवंता मर्सकोले सेवानिवृत्ति होने जा रही है तो ग्रामवासियों कुम्हारटेक ने उनके सेवानिवृत्त होने के अवसर पर शाला प्रांगण में सुन्दरकाण्ड का पाठ कर भव्य बिदाई समारोह आयोजित किया। इस मौके पर श्रीमती मर्सकोले ने बच्चों को प्रतिदिन स्कूल आने और पढ़ाई पर विशेष ध्यान देने के लिए कहा गया। कार्यक्रम में शिव पटेल यादव, मुख्य अतिथि श्रीराम मर्सकोले सरपंच कुम्हारटेक, लक्ष्मण पटेल यादव पूर्व सरपंच खण्डारा, गोकुल पटेल पूर्व सरपंच कुम्हारटेक, प्रधान पाठक पीआर धुर्वे, एवं शिक्षक प्रदीप रघुवंशी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक राजेन्द्र प्रसाद साहू द्वारा व आभार प्रधान पाठक पीआर धुर्वे ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में समस्त ग्रामवासी कुम्हारटेक, संस्था के बच्चे एवं संकुल खण्डारा के शिक्षक उपस्थित थे।

नपा परिसर में आयोजित हुआ रक्तदान शिविर, अधिकारियों कर्मचारियों और आमजनों ने लिया हिस्सा

120 लोगों ने किया रक्तदान, नपा ने दिया प्रशंसा पत्र

बैतूल। जिला अस्पताल स्थित ब्लड बैंक में रक्त की कमी दूर करने के लिए शुक्रवार को नगरपालिका परिसर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में नगरपालिका कर्मचारियों, सामाजिक संस्थाओं और आमजनों ने पहुंचकर स्वैच्छिक रक्तदान किया। सुबह करीब 10 बजे रक्तदान शिविर की शुरुआत की गई। जिसमें नगरपालिका सीएमओ सतीश मटसेनिया, जिला अस्पताल के डॉक्टर, नपा कर्मचारी सहित अन्य लोग मौजूद रहे। शिविर में शाम करीब 4 बजे तक 120 लोग रक्त का दान का चुके है। दरअसल आदिवासी बाहुल्य जिले बैतूल में रक्त की कमी न हो, इसके लिए यह शिविर आयोजित किया गया था। जिसमें नगरपालिका के अधिकारियों-कर्मचारियों के अलावा सामाजिक संस्थाओं और आमजनों ने भी बढ़-चढ़कर रक्तदान किया। बताया जा रहा है कि रक्तदान शिविर में नगरपालिका सीएमओ सतीश मटसेनिया ने स्वयं रक्तदान कर शिविर की शुरूआत की। जिसके बाद नगरपालिका कर्मचारियों ने अपनी स्वेच्छा से न सिर्फ रक्तदान किया, बल्कि अन्य लोगों को भी रक्तदान करने के लिए प्रेरित कर रक्तदान कराया। इस दौरान 120 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया, जो जिला अस्पताल में बहुत हद तक रक्त की कमी को दूर करने में सार्थक साबित होगा। शिविर में अधिकारी, कर्मचारियों के साथ शहर के अन्य लोगों ने भी रक्तदान किया। वहीं शिविर के दौरान हरित महाअभियान के तहत फलदार पौधों का भी वितरण किया गया। चिकित्सकों का कहना है कि यदि सभी लोग इसी तरह से रक्तदान करते रहे तो ब्लड बैंक में रक्त की कमी नहीं आएगी।

नई शिक्षा नीति

सुनील कुमार

लेखक शिक्षाविद हैं।

बुनियादी शिक्षा की दिशा में बढ़ते कदम

नीति इस बात को स्पष्ट रूप से स्वीकार करती है कि देश में बच्चों की बुनियादी पढ़ाई की स्थिति संतोषजनक नहीं है और इस दिशा में गंभीरता से कार्य करने की आवश्यकता है। यह पहली बार है जब किसी राष्ट्रीय नीति ने बुनियादी शिक्षा को स्पष्ट दिशा और प्राथमिकता दी है। इससे यह व्यापक स्वीकृति बनी कि यदि हमें समग्र शैक्षिक सुधार की दिशा में आगे बढ़ना है, तो सबसे पहले बच्चों की बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान को सुदृढ़ करना होगा। इसके लिए सभी राज्यों को 2026-27 तक एफएलएन (फाउंडेशन लिटरेसी एंड न्यूमरेसी) लक्ष्य प्राप्त करने हेतु एक सुव्यवस्थित कार्ययोजना बनानी थी और उसका प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करना था।

भारत में नई शिक्षा नीति (एनईपी 2020) को लागू हुए पाँच वर्ष हो चुके हैं। इस नीति में कई महत्वपूर्ण प्रावधान शामिल किए गए हैं, जिनमें सबसे प्रमुख है–बुनियादी शिक्षा पर विशेष बल। नीति इस बात को स्पष्ट रूप से स्वीकार करती है कि देश में बच्चों की बुनियादी पढ़ाई की स्थिति संतोषजनक नहीं है और इस दिशा में गंभीरता से कार्य करने की आवश्यकता है। यह पहली बार है जब किसी राष्ट्रीय नीति ने बुनियादी शिक्षा को स्पष्ट दिशा और प्राथमिकता दी है। इससे यह व्यापक स्वीकृति बनी कि यदि हमें समग्र शैक्षिक सुधार की दिशा में आगे बढ़ना है, तो सबसे पहले बच्चों की बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान को सुदृढ़ करना होगा। इसके लिए सभी राज्यों को 2026-27 तक एफएलएन (फाउंडेशन लिटरेसी एंड न्यूमरेसी) लक्ष्य प्राप्त करने हेतु एक सुव्यवस्थित कार्ययोजना बनानी थी और उसका प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करना था।

हालाँकि, यह ध्यान देने योग्य है कि एनईपी लागू होने से पहले भी विभिन्न राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय सर्वेक्षणों–जैसे कि असर और एनएएस–ने यह स्पष्ट किया था कि बच्चों की बुनियादी शिक्षा की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। रिपोर्टों से बार-बार यह सामने आया कि बड़ी संख्या में बच्चे अपनी कक्षा के स्तर के अनुसार पढ़ने, लिखने और गणना करने में असमर्थ हैं। इसके बावजूद लंबे समय तक इस दिशा में कोई ठोस, योजनाबद्ध और परिणामोन्मुखी प्रयास नहीं किए गए। कुछ राज्यों ने स्थिति की गंभीरता को समझते हुए पहल की, परन्तु अधिकांश स्थानों पर न ठोस योजना बनी और न ही प्रभावी क्रियान्वयन हुआ।

उत्तर प्रदेश का अनुभव इस दिशा में प्रेरणादायी रहा है। राज्य सरकार ने 2018-19 में 'ग्रेडेड लर्निंग कार्यक्रम' शुरू किया, जिसका उद्देश्य था–बच्चों की पढ़ने और गणना संबंधी बुनियादी दक्षताओं को मजबूत करना। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सरकारी विद्यालयों में कमजोर बच्चों के लिए प्रतिदिन 2-3 घंटे का विशेष समय निर्धारित किया गया, जिसमें उन्हें उनकी कक्षा के अनुसार नहीं, बल्कि उनकी दक्षता के आधार पर समूह बनाकर पढ़ाया गया। इस प्रयास में 'प्रथम' संस्था की महत्वपूर्ण भूमिका रही। वर्षों से 'टीचिंग एट राइट लेवल' पद्धति के माध्यम से प्रथम ने यह प्रमाणित किया है कि यदि बच्चों को उनकी वास्तविक शैक्षणिक जरूरतों के अनुसार पढ़ाया जाए, तो उनके सीखने के स्तर में उल्लेखनीय सुधार संभव है। उत्तर प्रदेश सरकार ने इसी दृष्टिकोण को अपनाया और प्रथम के साथ मिलकर प्रभावी ढंग से कार्यक्रम को लागू किया।

एफएलएन मिशन लागू होने से पहले उत्तर प्रदेश ने 'मिशन प्रेरणा' की शुरुआत की, जिससे विद्यालयों में बुनियादी शिक्षा को मजबूत करने के लिए कार्ययोजनाएँ बनीं। विद्यालयों की सुविधाओं में सुधार किया गया, शिक्षकों के लिए संदर्शिकाएँ विकसित की गई और शिक्षण सामग्री वितरित की गई। 2018 से 2024 के बीच, उत्तर प्रदेश सरकार ने कई अन्य गैर-सरकारी संस्थाओं के साथ मिलकर कई उल्लेखनीय पहल कीं। इन प्रयासों के सकारात्मक परिणाम हमें असर 2018 और 2024 की रिपोर्टों में देखने को मिले। उदाहरण के लिए, कक्षा 3 के वे बच्चे जो कक्षा 2 का पाठ पढ़ सकते थे, उनकी संख्या 2018 में 28.3 प्रतिशत थी, जो 2024 में बढ़कर 34.4 प्रतिशत हो गई। घटाव का सवाल हल कर पाने वाले कक्षा 3 के बच्चों की संख्या 2018 में 26.9 प्रतिशत से बढ़कर 40.7 प्रतिशत हो गई। इसी तरह, कक्षा 5 के वे छात्र जो कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ सकते थे, वे 2018 में 52.4 प्रतिशत थे, जो 2024 में बढ़कर 56.5 प्रतिशत हो गए। गणित में भी उल्लेखनीय सुधार देखा गया–भाग हल कर पाने वाले कक्षा 5 के छात्र 2018 में 29.8 प्रतिशत थे, जो 2024 में 39.5 प्रतिशत हो गए। हाल में ही जारी 'परख' की रिपोर्ट में भी कक्षा 3 के बच्चों के सीखने के स्तर में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। यह दर्शाता है कि यदि ठोस और बच्चों की ज़रूरतों पर आधारित प्रयास किए जाएँ, तो सुधार न केवल संभव, बल्कि मापनीय भी है।

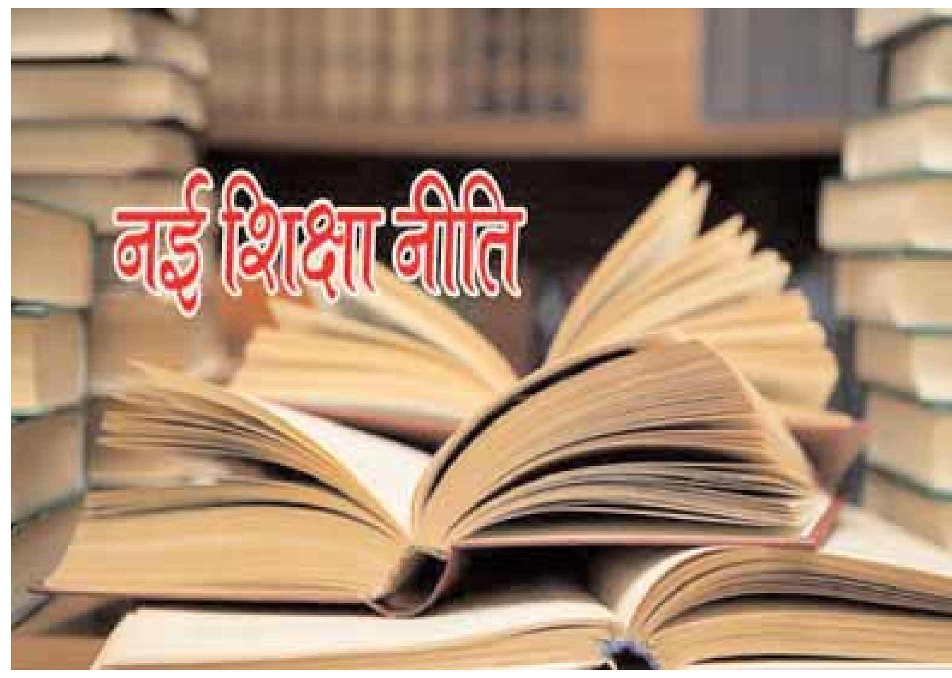

भोपाल के 8 ब्लैक स्पॉट पर पहुंचे न्यायमूर्ति सप्रे

पूछा–एक्सीडेंट की क्या वजह?, लेफ्ट टर्न, जेबरा क्रॉसिंग–सिग्नल को भी देखा

भोपाल (नप्र)। सुप्रीम कोर्ट की सड़क सुरक्षा समिति के अध्यक्ष और पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति अभय मनोहर सप्रे ने शुक्रवार को भोपाल के उन ब्लैक स्पॉट को देखा, जहां सबसे ज्यादा एक्सीडेंट हुए हैं। इनमें वो जगह भी शामिल हैं जहां फिर से हादसा होने का खतरा है। उन्होंने करीब 3 घंटे में 8 ब्लैक स्पॉट का जायजा लिया और अफसरों से चर्चा की। लेफ्ट टर्न, जेबरा क्रॉसिंग और सिग्नल को भी देखा। कुछ स्पॉट पर उन्होंने अफसरों से पूछा कि यहां एक्सीडेंट होने की क्या वजह है?

न्यायमूर्ति सप्रे सुबह 11 बजे प्लेटिनम प्लाजा के सामने अटल पथ पर पहुंचे। यहां पहले से निगम कमिश्नर हरेंद्र नारायण, स्मार्ट सिटी सीईओ अंजू कुमार, जिपं सीईओ इला तिवारी, एडीएम अंकुर मेश्राम, एडिशनल डीसीपी ट्रैफिक बीएस कौल, एसडीएम रविशंकर राय, एसीपी अजय वाजपेयी, विजय दुबे आदि अफसर मौजूद थे।

तरुण पुष्कर तिराहे पर लेफ्ट टर्न बनेगा– प्लेटिनम प्लाजा चौराहे पर न्यायमूर्ति सप्रे ने हादसों के बारे में जानकारी ली। इस पर पुलिस अफसरों ने बताया कि नेहरू नगर से अटल पथ होते हुए वाहन माता मंदिर की ओर तेजी से पहुंचते हैं। इस वजह से हादसे होते हैं। पिछले हादसों की वजह भी यही थी। यहां करीब 20 मिनट तक निरीक्षण किया।

तरुण पुष्कर तिराहे पर लेफ्ट टर्न की जगह कम होने की बात सामने आई। हालांकि, एडिशनल डीसीपी कौल बोले कि स्मार्ट पोल शिफ्टिंग के बाद लेफ्ट टर्न सही किया जा रहा है। इसके बाद न्यायमूर्ति सप्रे रेडक्रास हॉस्पिटल के पहले चौराहे पर पहुंचे। पुलिस अफसरों ने बताया कि चौराहे की रोटरी को बेहतर कर रहे हैं। यहां महाराणा प्रताप की प्रतिमा लगी है। इसे अच्छी जगह पर शिफ्ट करने पर विचार कर रहे हैं। इस चौराहे पर देर रात बड़े हादसे होने की जानकारी भी दी गई। जिला कोर्ट के सामने चौराहे पर भी लेफ्ट टर्न को बेहतर करने की बात हुई। फिर पर्यावास भवन के पास उस ब्लैक स्पॉट को देखा, जिसे डेढ़ साल पहले की बंद किया गया था। यहां से टीम सीधे अवधपुरी से पहले भेल चौराहे पर पहुंची। फिर रायसेन रोड स्थित रत्नागिरी चौराहे का निरीक्षण किया।

हादसे की वजह, मृतकों की संख्या की जानकारी ली

न्यायमूर्ति सप्रे ने निरीक्षण के दौरान हादसों की वजह, मृतकों की संख्या और वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी ली। उन्होंने अतिक्रमण हटाने और ब्लैक स्पॉट को जल्द समाप्त करने को कहा।

तीन साल में 99 एक्सीडेंट हुए, 27 लोगों की मौत

बता दें कि पिछले तीन साल में शहर में 16 ब्लैक स्पॉट्स पर 99 हादसों में 27 लोगों की मौत हो चुकी है। इस मामले में जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जजों की टीम भोपाल पहुंची है। शुक्रवार को टीम शहर में जायजा लिया। इससे पहले गुरुवार को न्यायमूर्ति सप्रे ने बैठक ली थी। जिसमें भोपाल जिले में पिछले 5 साल में हुई दुर्घटनाओं, ब्लैक स्पॉट चिह्नांकन एवं उनके सुधार कार्यों, चालानी कार्रवाई, जन-जागरुकता अभियानों और अन्य नवाचारों के बारे में जाना था। उन्होंने कहा था कि हर व्यक्ति का जीवन अमूल्य है और किसी की गलती से निर्दोष की जान न जाए यह तय किया जाए।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मानस भवन में तुलसी जयंती एवं अलंकरण समारोह को संबोधित किया।

पेंटिंग भेंट

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को समत्व भवन में निफ्ट कोलकाता की छात्रा सुश्री गौरांगी शर्मा ने इंडोनेशियाई रामायण से प्रेरित भगवान श्री राम-सीता के स्वयंवर की स्वयं बनाई पेंटिंग भेंट की।

बालाघाट में दो बाइक की भिड़ंत, 3 लोगों की मौत

एक गंभीर घायल का इलाज जारी, हाईवे पुलिया पर हादसा

बालाघाट (नप्र)। बालाघाट में दो बाइक की आमने-सामने भिड़ंत हो गई। हादसे में लोगों की मौत हो गई। दो लोगों ने घटनास्थल पर ही दम तोड़ दिया, जबकि एक ने जिला अस्पताल में इलाज के दौरान अंतिम सांस ली।

हादसे में एक 18 वर्षीय युवक की स्थिति अभी भी गंभीर बनी हुई है। घटना बालाघाट-गोंदिया हाईवे पर मंगोली धड़ी पुलिया के पास शुक्रवार दोपहर एक से दो बजे के बीच की है।

एक बाइक पर सवार दो लोग खारा से रजेगांव जा रहे थे– जानकारी के अनुसार, किरनापुर थाना क्षेत्र के खारा निवासी आईटीआई छात्र गौरव कामड़े और 19 साल का कुणाल वैद्य किसी काम से खारा से रजेगांव जा रहा था। इसी दौरान मंगोली धड़ी गांव के हाईवे पुलिया पर उनकी बाइक की दूसरी बाइक से टकरा गई। हादसे दोनों बाइक बुरी तरह से डैमेज हो गई हैं।

हादसे में इनकी हुई मौत– हादसे में कुणाल वैद्य और ऋषभ (पिता नंदकिशोर) की मौके पर ही मौत हो गई। गंभीर रूप से घायल गौरव और ऋषभ के साथी को एंबुलेंस से जिला अस्पताल ले जाया गया। वहां ऋषभ के साथी ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

अभी तक इस व्यक्ति की पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस के अनुसार, मृतक ऋषभ और उसके साथी के मूल निवास स्थान का भी पता नहीं चल पाया है। कुछ लोग उन्हें कर्नाटक का बता रहे हैं तो कुछ पश्चिम बंगाल का। पुलिस मृतक की पहचान करने में जुटी है।

घटनास्थल पर मृत हुए खारा निवासी कुणाल और ऋषभ के शव को पोस्टमॉर्टम के लिए किरनापुर अस्पताल ले जाया गया है। ऋषभ के साथी का शव जिला अस्पताल में रखा गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

रतलाम में असिस्टेंट कमांडेंट ने की खुदकुशी की कोशिश

डिप्रेशन की 50 गोलियां एक साथ खाई सीनियर अफसरों पर प्रताड़ना का आरोप

रतलाम (नप्र)। रतलाम के जावरा में 24वीं बटालियन के असिस्टेंट कमांडेंट रामबाबू पाठक ने शुक्रवार सुबह 11 बजे डिप्रेशन की 50 गोलियां खाकर सुसाइड की कोशिश की। परिजन उन्हें प्राइवेट क्लिनिक लेकर गए।

यहां से शुक्रवार दोपहर 1 बजे उन्हें रतलाम मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया। इसके बाद उन्हें इंदौर के बॉम्बे हॉस्पिटल भेजा गया है। रामबाबू की बेटी मुस्कान और परिजन एम्बुलेंस से लेकर उन्हें रवाना हुए हैं। उनका एक बेटा भी है जो भोपाल में रहता है। वो खबर मिलते ही इंदौर के लिए रवाना हो गया।

असिस्टेंट कमांडेंट की पत्नी और बेटी ने बटालियन के सीनियर अधिकारियों पर प्रताड़ना का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि लगातार ड्यूटी के चलते रामबाबू डिप्रेशन में थे। शुक्रवार सुबह रामबाबू बटालियन की परेड में शामिल हुए थे। बताया जा रहा है कि उन्होंने सुसाइड नोट फेसबुक पर पोस्ट किया था, जिसे बाद में डिलीट कर दिया। बेटी मुस्कान ने बताया कि पापा ने दुनिया छोड़ कर जाने का एक लेटर लिखा है।

रोज कहते थे लाइफ खत्म कर लूंगा– रामबाबू की बेटी ने कहा- हमारे पास उनके डिप्रेशन में रहने के सभी डॉक्यूमेंट्स हैं। डॉक्टर तक ने ड्यूटी करने के लिए मना किया था, लेकिन विभाग ने उसे बहाना बताया। उन्होंने वीआरएस लेने का भी विचार किया था। वो रोज बोलते थे कि मैं अपनी लाइफ खत्म कर लूंगा। हम एसपी सर को भी बताकर आए थे।

भिंड रेलवे स्टेशन पर ट्रेन के नीचे लेटकर सुसाइड

इटावा–कोटा पैसेंजर के चलते ही ट्रैक पर लेटा, सिर और धड़ अलग हुआ

भिंड (नप्र)। भिंड रेलवे स्टेशन पर एक व्यक्ति ने ट्रेन के चलते ही पटरी पर अपना सिर रख दिया। ट्रेन का पहिया उसकी गर्दन के ऊपर से गुजर गया। उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना बुधवार शाम की है। मनेपुरा गांव के रहने वाले राजीव जोशी (45) ने ट्रेन से कटकर सुसाइड कर लिया। बताया जा रहा है कि वह पारिवारिक समस्याओं के कारण मानसिक तनाव से जूझ रहा था।

ट्रेन के चलते ही ट्रैक पर रखा सिर

रेलवे पुलिस थाना प्रभारी प्रीतम सिंह भदौरिया ने बताया कि राजीव जोशी करीब एक घंटे से स्टेशन पर बैठा हुआ था। शाम करीब 5:30 बजे इटावा-कोटा पैसेंजर ट्रेन के आने पर वह ट्रेन में चढ़ा और फिर दूसरी तरफ उतर गया। काफी देर तक घूमने के बाद शाम साढ़े पांच बजे जैसे ही ट्रेन चलने लगी, वह नीचे लेट गया। उसने ट्रैक पर अपना सिर रख दिया।

स्टेशन पर मची अफरा-तफरी

घटना के बाद आरपीएफ मौके पर पहुंची। स्टेशन पर अफरा-तफरी मच गई। स्थानीय लोगों की मदद से मृतक की पहचान की गई और परिजनों को सूचित किया गया। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया गया है। रेलवे पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। परिजनों के पहुंचने के बाद कानूनी प्रक्रिया पूरी की गई। पुलिस आत्महत्या के कारणों की जांच कर रही है।

एमपी के सांसदों की दिल्ली में बैठक

बीएल संतोष ने पूछा– किसी दूसरे सांसद के नवाचार बताएं, राजगढ़ सांसद की हुई तारीफ

भोपाल (नप्र)। दिल्ली में मप्र के सांसदों की बैठक हुई। इस बैठक में बीजेपी के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बीएल संतोष, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा, डिप्टी सीएम राजेन्द्र शुक्ल, जगदीश देवड़ा, प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह, सह प्रभारी सतीश उपाध्याय और लोकसभा-राज्यसभा के सांसद गण मौजूद थे।

संतोष ने सांसदों से पूछा– किसी दूसरे सांसद के नवाचार बताएं– बैठक में बीजेपी के राष्ट्रीय संगठन् महामंत्री बीएल संतोष ने सांसदों से कहा अपने राज्य के किसी दूसरे सांसद द्वारा किए गए नवाचार के बारे में बताएं। इस दौरान एक सांसद ने राजगढ़ सांसद रोडमल नागर द्वारा अपने संसदीय क्षेत्र में स्थानीय रोजगारों और वोकल फॉर लोकल को लेकर किए गए नवाचार के बारे में बताया।

सांसदों से पूछा– टाइम मैनेजमेंट कैसे करते हैं?– बीएल संतोष ने सांसदों से पूछा कि जब आप दिल्ली में रहते हैं तो टाइम मैनेजमेंट कैसे करते हैं?। संसदीय क्षेत्र बड़ा होता है तो प्रवास और दौरों के कार्यक्रमों की प्लानिंग कैसे करते हैं । संतोष ने सांसदों से पूछा कि एमपीलैड फंड के आवंटन किस तरह करते हैं।

ये सांसद और केन्द्रीय मंत्री रहे मौजूद– केन्द्रीय मंत्रीः शिवराज सिंह चौहान, दुर्गादास उईके, डॉ. वीरेन्द्र कुमार खटीक, सावित्री ठाकुर, एल मुरूगन

लोकसभा सांसद वीडी शर्मा (खजुराहो), राजेश मिश्रा (सीधी), रोडमल नागर (राजगढ़), ज्ञानेश्वर पाटिल (खंडवा), राहुल सिंह लोधी(दमोह), शिवमंगल सिंह तोमर (मुरैना), दर्शन सिंह चौधरी (होशंगाबाद), बंटी साहू (छिंदवाड़ा), आलोक शर्मा (भोपाल), गणेश सिंह (सतना), आशीष दुबे (जबलपुर), हिमाद्री सिंह (शहडोल), जर्नादन मिश्रा (रीवा),अनीता चौहान (झाबुआ), शंकर लालवानी (इंदौर), अनिल फिरोजिया (उज्जैन), भारत सिंह कुशवाह (ग्वालियर), गजेन्द्र सिंह पटेल (खरगोन), फग्गन सिंह कुलस्ते (मंडला), सुधीर गुप्ता(मंदसौर), भारती पारदी (बालाघाट), संध्या राय (भिंड), लता वानखेड़े (सागर), महेन्द्र सिंह सोलंकी(देवास)

राज्यसभा सांसदः डॉ. उमेश नाथ महाराज, सुमेर सिंह सोलंकी, कविता पाटीदार, सुमित्रा बाल्मीकि, माया नारोलिया।

खाद संकट पर विधानसभा में कांग्रेस का जोरदार प्रदर्शन

विधायकों ने खाद की खाली बोरियां और नैनो खाद की प्रतीकात्मक बोतलें लेकर किया प्रदर्शन

किसानों के दर्द को अनदेखा कर सीएम सिर्फ यात्राओं में व्यस्त हैं : सिंघार

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश विधानसभा के मानसून सत्र के पांचवें दिन आज कांग्रेस विधायक दल ने प्रदेश में लगातार गहराते खाद संकट और उससे किसानों को हो रही भारी परेशानी को लेकर विधानसभा परिसर में जोरदार प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन का नेतृत्व नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने किया। कांग्रेस विधायक दल के सदस्य खाद की खाली बोरियां और 'नैनो खाद' की प्रतीकात्मक बोतलें लेकर विधानसभा पहुंचे और सरकार की किसान विरोधी नीतियों पर सवाल उठाए।

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा प्रदेश के लाखों किसान खाद की लाइन में खड़े हैं, लेकिन सरकार आंख मूंदे बैठी है। एक तरफ बारिश का समय चल रहा है, दूसरी ओर किसानों को आवश्यक खाद तक नहीं मिल रही। उन्होंने कहा कि नकली और अनुपलब्ध खाद से किसान परेशान हैं और मुख्यमंत्री सिर्फ विदेशी यात्रियों में व्यस्त है।

उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि सरकार किसानों को राहत देने की बजाय, नैनो खाद जैसे प्रयोगों के जरिए उनके साथ खिलवाड़ कर रही है। उन्होंने कहा सरकार किसानों के आंसू नहीं पोंछना चाहती, उनके बच्चों के भविष्य की चिंता इस सरकार को नहीं है।

नेता प्रतिपक्ष ने की मांग

- किसानों को तत्काल पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध कराई जाए।
- खाद वितरण में पारदर्शिता सुनिश्चित हो
- सरकार सदन में इस मुद्दे पर जवाब दे
- नैनो खाद के दुष्प्रभावों की जांच कराई जाए

कांग्रेस विधायकों का यह प्रतीकात्मक विरोध प्रदर्शन किसानों की पीड़ा की आवाज को सदन तक पहुंचाने का प्रयास था। नेता प्रतिपक्ष ने स्पष्ट किया कि अगर किसानों की समस्याओं का शीघ्र समाधान नहीं किया गया, तो आंदोलन और तेज किया जाएगा।

विधानसभा में 'विजय शाह इस्तीफा दो' के नारे

कांग्रेस विधायकों ने अंदर और बाहर हंगामा कर किया प्रदर्शन, सदन की कार्यवाही 4 अगस्त तक स्थगित

भोपाल (नप्र)। शुक्रवार मध्यप्रदेश विधानसभा के मानसून सत्र के पांचवें दिन नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के नेतृत्व में कांग्रेस विधायकदल ने जनजातीय कार्य मंत्री विजय शाह की बर्खास्तगी की मांग को लेकर सदन में जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। मंत्री विजय शाह पर सेना और कर्नल सोफिया कुरैशी का सार्वजनिक रूप से अपमान करने का गंभीर आरोप है, लेकिन इसके बावजूद सरकार द्वारा अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है।

सत्र की कार्यवाही प्रारंभ होते ही कांग्रेस विधायकों ने विजय शाह को मंत्रिपद से हटाने की मांग उठाई। जब विपक्ष को इस विषय पर बोलने का अवसर नहीं दिया गया तो सभी विपक्षी विधायक सदन के भीतर ही धरने पर बैठ गए।

सदन से वॉकआउट करने के बाद जब दोबारा कार्यवाही शुरू हुई तो कांग्रेस विधायक अपनी मांग पर अड़े रहे। विपक्ष के अडिग विरोध के चलते अध्यक्ष ने सदन की कार्यवाही सोमवार तक स्थगित कर दी।

मीडिया से बातचीत में नेता प्रतिपक्ष ने कहा

सेना और एक महिला कर्नल का अपमान कोई छोटी बात नहीं है। विजय शाह का बयान न केवल अनुशासित सेना का अपमान है, बल्कि पूरे देश की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाला है। लेकिन सरकार उन्हें लगातार संरक्षण दे रही है। उन्होंने कहा कि आज विजय शाह सदन में मौजूद रहे और सरकार की चुप्पी साबित करती है कि देशभक्ति से ज्यादा उनके लिए मंत्री और वोट बैंक महत्वपूर्ण है। कांग्रेस इस मुद्दे पर किसी भी सूरत में पीछे नहीं हटेगी और विजय शाह की बर्खास्तगी तक संघर्ष जारी रहेगा। यह प्रदर्शन कांग्रेस विधायकदल की राष्ट्र के प्रति संवेदनशीलता और जवाबदेही की भावना को दर्शाता है, जहां देश की सेना और सम्मान से जुड़े हर मुद्दे पर कांग्रेस पूरी मजबूती से खड़ी है।

विजय शाह सदन में आए, कांग्रेस बोली- इस्तीफा दो

कर्नल सोफिया कुरैशी पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले मंत्री विजय शाह भी शुक्रवार को विधानसभा पहुंचे। इस पर कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया ने कहा की सेना का अपमान करने वाले मंत्री को इस्तीफा देना चाहिए। सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच बहस होने लगी। कांग्रेस के विधायक एक साथ सदन में नारेबाजी करने लगे।

बरैया बोले- सेना का अपमान करने वाले सदन में आए

भांडेर से कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया ने कहा- बीजेपी के पास बचने के लिए चार-पांच शब्द हैं, पाकिस्तान, मुसलमान, लव जिहाद, आतंकवाद और कश्मीर। ये पांच-छह शब्द हटा दिए जाएं तो भाजपा सरकार की ऑक्सीजन खत्म हो जाएगी। जब वे कमजोर पड़ते हैं और कोमा में जाने वाले होते हैं तो ये ऑक्सीजन लगा लेते हैं।

सरकारी जमीनों पर कब्जे को लेकर ध्यानाकर्षण

पूर्व मंत्री और भाजपा विधायक भूपेंद्र सिंह ने खुरई विधानसभा क्षेत्र के मालथोन में सरकारी जमीनों पर कब्जा किए जाने का मामला सदन में उठाया। उन्होंने आदिवासियों की जमीन पर कब्जा करने के मामले में एक सीनियर अफसर की नियुक्ति कर एक महीने में जांच कराने का आग्रह किया। साथ ही इस तरह की अनुमति पर रोक लगाने की मांग की। उन्होंने कहा कि 500 एकड़ जमीन की खरीद-फरोख्त हो चुकी है।

राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा ने माना कि मालथोन में जमीनों पर कब्जा है। उन्होंने भूपेंद्र सिंह के प्रस्ताव पर सीनियर अफसर भेजकर जांच के लिए सदन में आश्वासन दिया।

विजयवर्गीय बोले- कांग्रेस मुद्दा उठाने नहीं दे रही

कांग्रेस विधायकों के हंगामे को देखते हुए मंत्री विजयवर्गीय ने कहा कि एक ओर भाजपा के विधायक द्वारा जनजातियों की जमीन बचाने को लेकर ध्यानाकर्षण प्रस्ताव लाया गया है, दूसरी ओर नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस के लोग जनजातियों की जमीन पर कब्जे का ध्यानाकर्षण प्रस्ताव नहीं होने दे रहे हैं।

सदन से पहले खाद को लेकर कांग्रेस का प्रदर्शन

सदन की कार्यवाही शुरू होने से पहले भी कांग्रेस विधायकों ने प्रदेश में खाद संकट को लेकर प्रदर्शन किया। विपक्ष ने आरोप लगाया कि सरकार किसानों को खाद की जगह नैनो यूरिया थमा रही है। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा- प्रदेश का किसान परेशान है। किसानों को समय पर खाद नहीं मिल रही है। उनकी फसल मर रही है। सीएम विदेश यात्राएं कर रहे हैं। लेकिन किसान के लिए उनके पास समय नहीं है।

मानसून में बढ़ते संक्रमण से बचने के लिए विशेष सलाह

भोपाल। मानसून के मौसम में स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए सावधानी ही सबसे बेहतर उपाय है और इसी दृष्टिकोण के साथ एम्स भोपाल, कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में, नागरिकों को जागरूक करने की दिशा में कार्य कर रहा है। इस मौसम में वातावरण में अत्यधिक नमी, गंदा पानी और मच्छरों की वृद्धि के कारण जलजनित और संक्रामक रोगों का खतरा बढ़ जाता है। डायरिया, टाइफाइड, हैजा, मलेरिया, डेंगू, वायरल बुखार और त्वचा संक्रमण जैसी बीमारियां आमतौर पर इसी मौसम में तेजी से फैलती हैं। ऐसे में संस्थान ने नागरिकों से सतर्क रहने और कुछ बुनियादी सावधानियों को अपनाने की अपील की है। इस संबंध में प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, हम सभी को हाथों की स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि डायरिया जैसी बीमारियों से बच्चों और परिवार को सुरक्षित रखा जा सके। थोड़ी सी सतर्कता, समय पर सावधानी और स्वच्छता के प्रति जागरूकता ही इस मौसम में बीमारी से बचने का सबसे प्रभावी उपाय है। एम्स भोपाल की विशेषज्ञ टीम ने बताया कि हाथों की स्वच्छता के लिए कुछ विशेष समयों पर हाथ धोना अत्यंत आवश्यक है – जैसे शौचालय जाने के बाद, खाना बनाने या खाने से पहले, बच्चों का मल साफ करने के बाद, बच्चों को खाना खिलाने से पहले और कूड़ा या जानवरों को छूने के बाद।